RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 11	अंक : 10	मुम्बई, जनवरी 2022	पृष्ठ : 36	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 11	ISSUE : 10	MUMBAI, JANUARY 2022	PAGES : 36	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2548

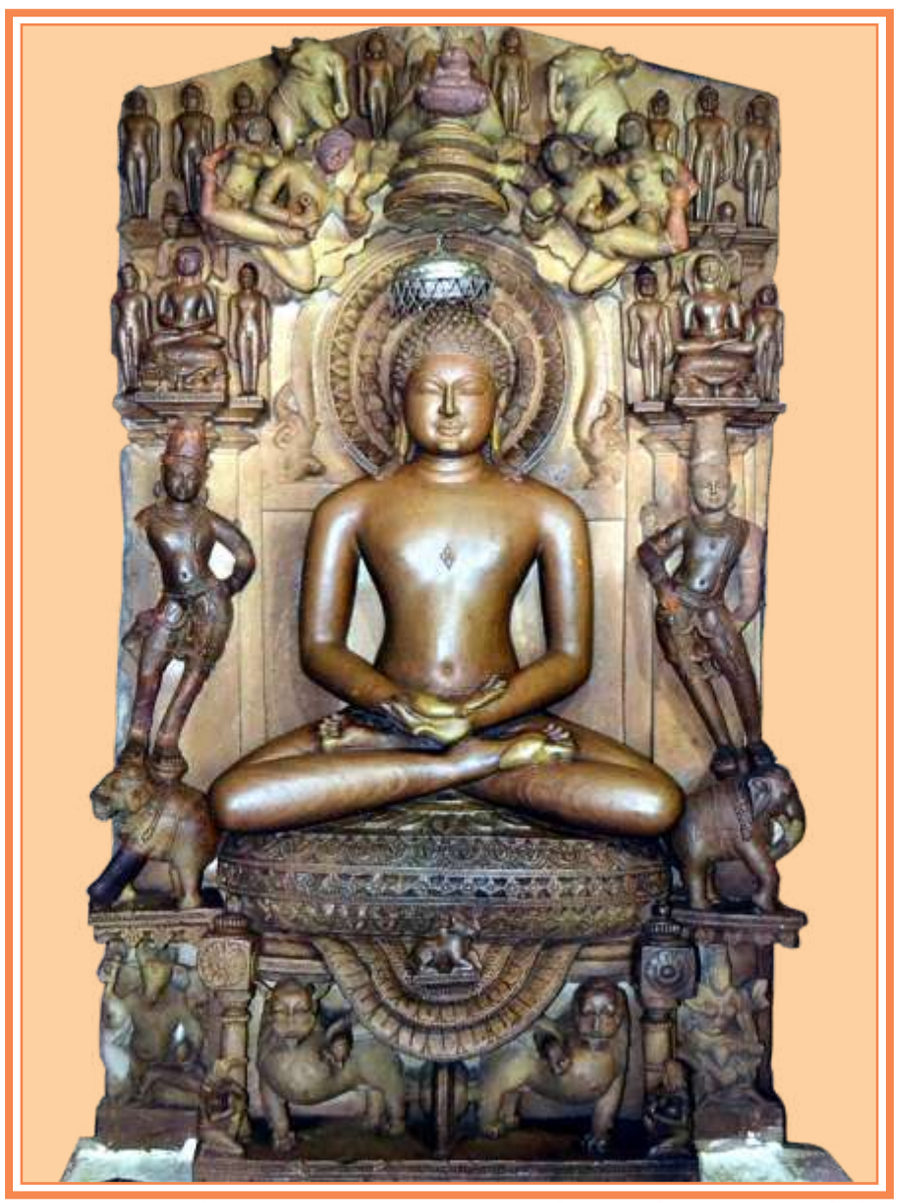

श्री 1008 आदिनाथ भगवान, श्री गोलाकोट-पचराई क्षेत्र

परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्भुत भेंट

दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारुप

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रूप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।

मंगल आशीर्वाद

प.पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है।आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रूपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारुप

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रूप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।

भावी योजनाएँ— 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संग्रहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. नन्द्यावर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

साहू अखिलेश जैन	**राजकुमार जैन**	**सतीश चन्द जैन SCJ**	**नरेश जैन** (कामधेनु), दिल्ली	**अनिल जैन**	**मुकेश जैन**	**राकेश जैन**	**राजेन्द्र जैन**
मुख्य संरक्षक	अध्यक्ष	अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था	अध्यक्ष—अकाऊंट उपसमिति	कार्याध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	निर्माण समिति	मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड) **पुनीत जैन** (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA GROUP A Symbol of Quality

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,
Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया TMT Grade Fe 415,500,550

बंधुओं ! सादर जय जिनेन्द्र,

तीर्थ हमारी श्रृद्धा एवं निष्ठा के सर्वोपरि केंद्र हैं। तीर्थों से ही धर्म को जीवन में स्वरूप मिलता है। वे धर्म और संस्कृति के नाभिस्थल हैं। ये ऐसे पवित्र स्थल हैं जिन्हें हमारे तीर्थंकर भगवंतों और उनके लघुनंदनों ने अपनी पूजा, अर्चना, आराधना, सतत तपश्चर्या एवं ध्यान साधना से उर्जस्वित किया है इसलिए सभी तीर्थक्षेत्र पूज्यस्थलों के रूप में हम सब के लिए पूजनीय हैं, और हैं वन्दनीय भी !

समस्त तीर्थक्षेत्रों में अयोध्या और सम्मेदशिखरजी अनादिनिधन (शाश्वत) तीर्थ हैं। प्रलय के समय में भी ये नष्ट नहीं होंगे। चित्रा पृथ्वी पर अंकित स्वस्तिक और श्रीफल के आकार के प्रतीक चिन्हों को देखकर इन्द्र द्वारा इनकी पुनर्रचना होती रहती है। तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी अनंत जीवों की सिद्ध भूमि है। प्रसिद्ध रचनाकार ने इसके महत्त्व को संस्कृत भाषा में उल्लेख किया है। श्री देवदत्त जी ने लिखा है-

यात्रा सम्मेदशैलस्य, भावतो येन रैः कृता।
सर्वार्थसिद्धि संयुक्तामुक्ति, स्तेषां करे स्थिता ।।

पवित्र पर्वतराज के इसी महत्त्व को अपने दृष्टिपथ में रखते हुए भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी स्थापना काल से ही तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन एवं सम्यक विकास में अपना योगदान दे रही है। विश्व की सम्पूर्ण जैन समाज के लिए सभी तीर्थक्षेत्रों में से एकमात्र सम्मेदशिखर ही ऐसा तीर्थ है जहाँ से हमारे 24 तीर्थंकरों में से 20 तीर्थंकरों ने निर्वाण प्राप्त किया है इसीलिए यह हम सबके लिए महान पावन, पवित्र व पूजनीय धर्मस्थल है। वर्तमान में सबसे अधिक संकट के बादल इसी तीर्थ पर मंडरा रहे हैं।

गत दिनों पर्वतराज पर कुछ अकल्पनीय घटनाएँ घटी हैं जो समग्र जैन समाज के लिए अस्वीकार एवं चिंतनीय भी हैं। कुछ दिनों पहले शिखरजी पर्वत की तलहटी में बीसपंथी कोठी की रैयती जमीन के एक हिस्से पर कुछ अज्ञात लोगों द्वारा एक विशेष समुदाय की धार्मिक भावना को भड़का कर धार्मिक निर्माण आदि की नींव रखी गई जो सभी प्रकार से न केवल अनुचित है अपितु गैरकानूनी भी है जिसके बारे में बीसपंथी कोठी की ओर से वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। इस गैर कानूनी कार्य के विरुद्ध पूरे भारतवर्ष के जैन समाज में विरोध एवं आक्रोश व्याप्त है।

इसी प्रकार अभी हाल में ही बंगाल से आये कुछ पर्यटकों द्वारा मधुबन प्रांगण में अहिंसा की इस पावन भूमि पर खुलेआम मूक पशुओं को निर्दयता से मार-काट कर मांस आदि की बिक्री करने, पकाने एवं भक्षण करने की घटनाएँ घटी हैं जिससे शिखरजी की पावन भूमि की इस पवित्रता के साथ न केवल खिलवाड़ हुआ है अपितु सरकार द्वारा मधुबन के आसपास करीब 2 कि.मी. की परिधि को जो अहिंसा का क्षेत्र घोषित है उसका भी घोर उपहास हुआ है। इन घटनाओं का जैन समाज ने घोर विरोध करते हुए विशाल रैली का भी आयोजन करके स्थानीय पुलिस विभाग को आवश्यक कार्यवाही करने एवं ऐसी घटना की पुनरावृत्ति न हो इसके लिए सजग रहने के हेतु ज्ञापन भी दिया है।

इसी श्रृंखला में अभी हाल में यह देखने में आ रहा है कि अनेक स्थानीय पर्यटक पर्वतराज पर पिकनिक स्थल के रूप में पहाड़ पर सैर-सपाटा करते हुए नज़र आ रहे हैं जिनके द्वारा न केवल पहाड़ अपवित्र हो रहा है अपितु जैन तीर्थयात्रियों एवं डोलीवालों को यात्रा करने में बाधाएँ भी उत्पन्न हो रही हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटी इस बारे में भी चिंतित है और इसके रोकथाम के लिए ठोस कार्यवाही करने पर विचार कर रही है।

जैसा कि आप सभी को विदित ही है कि सम्मेदशिखर जी की वंदना के दरमियान विशेषकर सर्दियों में प्रायः यह देखा गया है कि शीतकालीन मौसम में कई यात्रियों को वहाँ की कड़ाके की ठंड उनके लिए असह्य हो जाती है और वे दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं एवं समय पर उचित उपचार न मिलने के कारण उनका निधन भी हो जाता है। हमने तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से यात्रियों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व निभाते हुए दुर्घटना के समय ऐसी आपातकालीन स्थिति में यात्रियों की चिकित्सा आदि की सुविधा उपलब्ध की है। इस सुविधा में हमने आपातकालीन संपर्क नम्बर भी जारी किये हैं जिससे शिखरजी की वंदना करते समय यदि किसी यात्री को हृदयघात होता है या अन्य दुर्घटना घटती है तो उन्हें तुरंत उपरोक्त नम्बरों पर संपर्क करना होगा जिससे उनके पास प्राथमिक चिकत्सा व्यवस्था के साथ एम्बुलेंस उनके पास पहुंच सके और पीड़ित का तुरंत उपचार कर उसे नीचे मधुबन तलहटी में लाकर जहाँ वह ठहरा है उस संस्था के प्रबंधक के सहयोग से अस्पताल तक छोड़ने की व्यवस्था तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा की जा सके।

भारत में जिस तरह कोरोना विषाणु का संक्रमण पुनः तीव्रगति से बढ़ रहा है यह भी सम्पूर्ण भारतवर्ष के लिए चिंता का विषय है। इस बढ़ते संक्रमण में हमें अपने साधु-साध्वियों एवं त्यागी-व्रतियों के प्रति पूर्णतया सावधान रहने की आवश्यकता है। हमारे आचार्यों, मुनि-महाराजों एवं आर्यिका माताओं का विहार निरन्तर चल रहा है जिसमें अनेक स्थानों से दर्शनार्थी दर्शन-वंदन के लिए एकत्रित होते हैं इसमें हमें अत्यंत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आहारचर्या, वैयावृत्ति आदि अनेक कार्यों में हमें सावधानी बरतनी है और इस बात का भी हमें ध्यान रखना है कि हमारे साधु-साध्वी वैक्सीन तथा विभिन्न दवाओं का उपयोग नहीं करते हैं। अतः सावधानी का विशेष ध्यान रखें और अपने आप को भी सुरक्षित रखें।

शिखरचन्द पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 11 अंक 10 जनवरी 2022

श्री शिखरचन्द पहाड़िया
अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)
उपाध्यक्ष

श्री वसंतलाल दोशी
उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा
उपाध्यक्ष

श्री गजराज गंगवाल
उपाध्यक्ष

श्री तरुण काला
उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन (पेंढारी)
महामंत्री

श्री के.सी. जैन(काला)
कोषाध्यक्ष

श्री खुशाल जैन (सी.ए.)
मंत्री

श्री विनोद कोयलावाले
मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
मंत्री

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन, इन्दौर
सम्पादक
उमानाथ दुबे
सम्पादकीय सलाहाकार
डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली
श्री सुरेश जैन (IAS), भोपाल
श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई
श्री धरमचंद शास्त्री, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर
पं. (डॉ.) महावीर शास्त्री, सोलापुर
प्रकाश पापड़ीवाल, औरंगाबाद

तपस्वी सम्राट् आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज	7
जैन जीवन शैली की आधुनिक समय में उपयोगिता	8
काशी में जन्में तीर्थंकर चन्द्रप्रभ व पार्श्वनाथ भगवान की शिक्षाओं की प्रासंगिकता	11
भगवान महावीर के जीवन के संदर्भ में व्याप्त भ्रांतियाँ	13
उपट्टा लगने से मिली थी अजितनाथ की प्राचीन प्रतिमा	15
भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की महत्वपूर्ण कड़ी – श्रमण संस्कृति	17
Jainism in Pandya Country	20
सम्मेदशिखरजी: वर्तमान परिदृश्य	24

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:
1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।
किसी भी विवाद का निराकरण मुंबई न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा

कार्यालय: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुम्बई-400004
फोन : 022-23878293 फैक्स : 022-2385 9370
website : www.firthkshetracommittee.com, e-mail : firthvandana4@gmail.com, Whatsapp No. : 7718859108

मूल्य
वार्षिक : 300 रुपये
त्रिवार्षिक : 800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष) : 2500 रुपये

विनम्र अनुरोध

दिसम्बर 2021 के उत्तरार्ध में आदिवासी समुदाय के किन्हीं आराध्य के मंदिर हेतु सम्मेदशिखर पर्वत पर शिलान्यास के माध्यम से पूर्व मुख्यमंत्री श्री मरांडीजी ने अनावश्यक रूप से विवाद को जन्म दे दिया है। आदिवासियों को पर्वत पर जाने, वनोपज से संग्रह तथा मर्यादित आचरण का विरोध किसी को नहीं है किन्तु पर्यटन के नाम पर क्षेत्र की पवित्रता एवं शांति भंग की इजाजत किसी को नहीं दी जा सकती। वह भी जैन समाज की भूमि पर।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी स्थापना काल से ही दिगम्बरों के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध रही है और एक लम्बे समय से संघर्षरत भी है। हमारा अहिंसक संघर्ष अब निर्णायक स्थिति में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के सम्मुख पहुँच चुका है और अब लगातार केसेस चल रहे हैं। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपनी ओर से सुप्रीम कोर्ट के अच्छे से अच्छे अधिवक्ताओं के माध्यम से अपना पक्ष सशक्तता के साथ प्रस्तुत कर रही है इसके लिए भारतवर्ष के वरिष्ठ अधिवक्ताओं की सेवाएं ली जा रही है।

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी हम सबका है। और हमारी पहचान का एक प्रखर नक्षत्र भी है। वर्तमान में आये इस संकट का हमें मिलजुलकर सामना करना है, और विजय श्री को प्राप्त करना है। इस संवेदनशील समस्या का समाधान आपके सहयोग से ही संभव है कहीं ऐसा न हो कि हमारी तनिक सी भूल के लिए आगे आने वाली पीढ़ी हमें माफ़ न करें।

अतएव हमारा आपसे विनयपूर्वक अनुरोध है कि अपनी पहचान की रक्षा के लिए इस अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग में मुक्तहस्त से दान देकर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रयत्नों को मजबूत कीजिए।

कृपया दान राशि **भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी** के नाम से
बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी. रोड शाखा, ब्रांच मुंबई-400004
खाता क्र. 13100100008770, **IFSC CODE:** BARB0VPROAD
में जमा कराकर उसकी मुंबई कार्यालय (टेलीफोन 022-23878293) को सूचना देने की कृपा करें।

संतोष जैन पेंढारी
महामंत्री

सतर्कता एवं सक्रियता ही तीर्थों की रक्षा करेगी

विगत दिनों व्हाट्सएप पर सम्मेदशिखरजी की बहुत चर्चा रही। कारण पूर्व मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल मरांडी जी द्वारा सम्मेदशिखरजी के परम पावन पर्वत पर आदिवासियों के किसी मन्दिर का 21 दिसम्बर 2021 को शिलान्यास किया गया एवं बंगाल तथा अन्य प्रदेशों से आये पर्यटकों द्वारा इस पर्वत की परिधि में नववर्ष के प्रारम्भ में मांसाहार एवं मद्यपान रहा। हमारे तीर्थ पर कार्यरत विभिन्न संस्थाओं, धर्मशालाओं के प्रबन्धकों, स्थानीय बाजार के विक्रेताओं ने एवं भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों ने सजगता एवं सतर्कता से तत्काल कार्यवाही करते हुए इसका वैधानिक रीति से प्रतिकार किया। सभी संस्थाओं ने स्थानीय प्रशासन एवं पुलिस को ज्ञापन सौंपकर इस अहिंसा क्षेत्र एवं जैन धर्मावलम्बियों की आस्था के सर्वोच्च केन्द्र पर मांसाहार रोकने का अनुरोध किया। तीर्थक्षेत्र कमेटी के शीर्ष नेतृत्व द्वारा 5.1.2022 को दिये गये पत्र पर स्थानीय प्रशासन ने तत्काल कार्यवाही कर पुलिस प्रशासन को निर्देश दिये इसका समाचार भी इसी अंक में प्रकाशित है।

तीर्थ वन्दना के प्रस्तुत अंक में हमने पद्मश्री कैलाश मड़वैया जी, भोपाल का एक लेख भी इसी सन्दर्भ में प्रकाशित किया है इसमें स्थिति का सटीक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है साथ ही सम्यक् सुझाव भी दिये गये हैं। सम्पूर्ण देश में आदिवासियों से जैन समुदाय के मधुर संबंध हैं। मालवांचल में उनको मामा कहकर संबोधित किया जाता है। यह पारंपरिक रूप से उनके प्रति व्यक्त सम्मान का प्रतीक है।

'विश्व धरोहर' घोषित क्षेत्र सम्मेदशिखरजी जहाँ की भूमि का स्वामित्व दिगंबर जैन बीसपंथी मंदिर कमेटी अर्थात् जैन समाज के पास है, वहाँ बिना अनुमति के किसी भी प्रकार का निर्माण कदापि उचित नहीं ठहराया जा सकता है। सदियों से जैन समाज एवं आदिवासी बंधुओं के बीच चले आ रहे सौहार्द्र को बिगड़ने नहीं देना चाहिए। जैन समाज ने शिखर जी के जंगलों एवं वनोपज पर कभी कोई अधिकार नहीं मांगा। वे तो 20 तीर्थंकरों के चरण चिन्हों को पूजने जाते है एवं उस अंचल की पवित्रता, की शांति को बनाये रखना चाहते हैं। सदैव से वरिष्ठ जैन बन्धुओं को डोली के माध्यम से यात्रा हमारे आदिवासी बन्धु ही कराते हैं। मात्र इतना ही नहीं यदि किसी अन्य तीर्थ या वरिष्ठ साधुओं को विहार में डोली की आवश्यकता होती है तो शिखर जी के आदिवासियों भाइयों को ही बुलाया जाता है क्योंकि वे सब पूर्णतः परीक्षित हैं। केवल सम्मेदशिखरजी ही नहीं अपितु सम्पूर्ण अंचल के आदिवासी भाइयों की आजीविका जैन समुदाय की धार्मिक यात्रा (आधुनिक शब्दों में धार्मिक पर्यटन) से चलती है। इसरी बाजार से लेकर मधुबन तक सब कुछ स्थानीय समाज के सहयोग से ही चलता है।

हम सम्पूर्ण जैन समाज का इस हेतु आह्वान करते हैं कि हमारे तीर्थों की सुरक्षा एवं विकास हेतु सदैव सजग एवं सचेष्ट भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को अपना पूर्ण सहयोग एवं समर्थन देवें। आप सभी सजग एवं सक्रिय रहें। यदि किसी भी तीर्थ पर अतिक्रमण हो, वहाँ की पवित्रता को खण्डित करने के प्रयास हो तो तत्काल तीर्थक्षेत्र कमेटी के मुम्बई कार्यालय सूचित करें। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि तीर्थक्षेत्र कमेटी तत्काल कार्यवाही करेगी। समाजजनों की सतर्कता एवं सक्रियता ही तीर्थों की रक्षा करेगी।

एक बात और! शासन द्वारा अब भूमि अभिलेखों का डिजिटाइजेशन किया जा रहा है आप भी अपने समीपवर्ती क्षेत्र के प्रबन्धकों को कहें कि वे किसी योग्य व्यक्ति का सहयोग लेकर तीर्थ हेतु इसे सम्पन्न करा लेवें। जैन इंजीनियर्स सोसायटी ने भी इस हेतु सहयोग का प्रस्ताव दिया है, सहयोग लेवें। अंक पर आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत है।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

तपस्वी सम्राट् आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज

-आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज

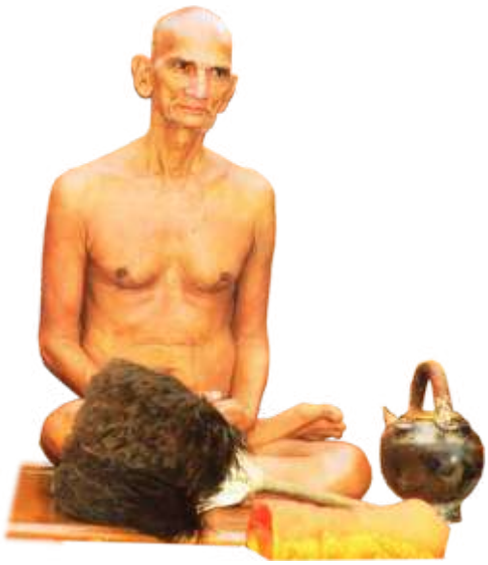

जन्म- तपस्वी सम्राट् के रूप में विश्व विख्यात आचार्य श्री सन्मतिसागर जी गुरुदेव का जन्म उत्तरप्रदेश के एटा जिले के शिखरबन्द जिनालय युक्त फफोतू ग्राम में हुआ था। माघ शुक्ल सप्तमी सन् 1938 को पिताश्री प्यारेलाल जी वा मातुश्री जयमाला के गृहांगण में आप अवतरित हुए। अनेक शुभलक्षणों से युक्त बालक का ज्योतिषानुसार नाम चैनसुख निकला किन्तु उसके मुख से ओम् .....ओम् सुनकर सभी उसे 'ओमप्रकाश' नाम से पुकारने लगे।

शिक्षा- बालसुलभ चेष्टाओं से वृद्धिंगत होते बालक ओमप्रकाश का नाम गाँव के एक शिक्षालय में शिक्षा प्राप्ति हेतु लिखा दिया गया। आपकी किशोरावस्था में ही आपके पिताश्री का आकस्मिक देहावसान हो गया। खुशियों की फिजाएं गमगीनता में बदल गईं। पढ़ाई से आपका मन उचट गया। आपके मामा ने प्रयास कर एटा के वर्णी विद्यालय में आपका प्रवेश करा दिया। जहाँ आपने बी.ए. के समकक्ष 'प्रभाकर' की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

वैराग्य- उ.प्र. सरकार के मलेरिया विभाग में सरकारी नौकरी भी आप करने लगे, किन्तु पिता के देहावसान से अंकुरित वैराग्य के अंकुर बढ़ते ही गए। सोनागिर की सामूहिक यात्रा के अवसर पर आगरा के बेलनगंज, जैन मन्दिर में आपने आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया और नमक का त्याग कर दिया। माँ, मामा व जीजाजी के अनेक प्रयत्नों के बाद भी आप विवाह को तैयार नहीं हुए। स्पष्ट कर दिया कि आप छोटे भाई पुत्तूलाल से आशा रखें, मैं तो दीक्षा लूँगा।

दीक्षा- नौकरी में अधिकारियों से कुछ तनातनी हो गई फिर उनके माफी माँगने पर भी वे नहीं ठहरे। सीधे आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के श्रीचरणों में मेरठ जा पहुँचे। आपकी योग्यता देखकर उन्होंने श्रावण शुक्ल दूज को सात प्रतिमा देकर ब्रह्मचारी कुलभूषण नाम रखा। श्रावण शुक्ल अष्टमी वि.सं. 2017 में क्षुल्लक दीक्षा प्रदान करते हुए क्षुल्लक नेमिसागर जी नाम रखा। उनके ही करकमलों से सम्मेदशिखर जी में कार्तिक शुक्ल द्वादशी के शुभ दिन (वि.सं. 2019) आपको जैनश्वरी मुनि दीक्षा प्राप्त हुई। आपने तेल-दही आदि का त्याग करते हुए धान्यों का परिसीमन किया। खड्गासन मुद्रा से ध्यान करने की समय सीमा बढ़ाई, ज्ञानाभ्यास का लक्ष्य भी स्थिर किया।

विक्रम संवत् 2020 का चातुर्मास बाराबंकी में हुआ। वहाँ से विविध तीर्थों की वंदना करता हुआ संघ बावनगजा (बड़वानी) पहुँचा। जहाँ गुरु व गुरु के गुरु दोनों संघों का चातुर्मास एक साथ हुआ। आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी के ज्ञान तथा उनकी शिक्षण शैली से आप बड़े प्रभावित हुए। श्रेष्ठज्ञान की आशा संजोए हुए आप और आर्यिका विजयमती माता जी आचार्य गुरुदेव श्री विमलसागर जी से पूछकर उनके साथ रहने लगे। आपने चटाई, घी, बूरा आदि पदार्थों का त्याग कर दिया। सात वर्ष के अध्ययन काल में आपने गुरुदेव से केवल शास्त्रज्ञान की नहीं सीखा अपितु अनुभव भी सीखे।

आचार्य पद- आपकी विशिष्ट योग्यताओं को देखते हुए आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी महाराज ने अपने गुरुदेव आचार्य श्री आदिसागर जी महाराज (अंकलीकर) से प्राप्त अपना आचार्य पद शरीर त्याग के तीन दिन पूर्व ही माघ कृष्ण तीज वि.सं. 2028 (सन् 1972) में गुजरात के मेहसाना में संघ की साक्षी में आपको सौंपा। आपके आचार्य पद का विशेष समारोह उदयपुर में किया गया। आप तृतीय पट्टाधीश आचार्य के रूप में सुप्रसिद्ध हुए।

तपस्या- कलकत्ता चातुर्मास (1975) में आपने सब प्रकार के धान्यों का त्याग किया। सिंहनिष्क्रीडित, चारित्रशुद्धि, सहस्त्रनाम, पल्यव्रत, अष्टाह्निका व दशलक्षण आदि के निरंतर व्रत करते हुए सात हजार,आठ सौ अठासी से भी अधिक आपने उपवास किए। श्री सम्मेदशिखर जी (1998) में आपने दूध भी त्याग दिया। कृत्रिम त्याग करते हुए आपने नरवाली में गन्ने के रस का भी त्याग कर दिया और केवल जल व मट्ठे पर घोर साधना जारी रखी। एकांतर उपवास की तपस्या करते हुए वे अष्टाह्निका व दशलक्षण के उपवास करते रहे।

भारतदेश के विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें तपस्वी सम्राट्, अध्यात्मयोगी, श्रमण चक्रवर्ती, महातपो-विभूति, महातपो-मार्तण्ड, तार्किक चूड़ामणि, चारित्र चक्रवर्ती, भारत गौरव, युगाचार्य शिरोमणि आदि उपाधियों से विभूषित किया गया है।

समाधि-आप तपस्या के सिरमौर थे। आपने श्रेष्ठतम जीवन का सार साधते हुए तीन उपवास पूर्वक अत्यन्त प्रयत्न से श्रेष्ठ इंगिनी मरण साधा। तिहत्तर वर्ष की आयु में 24 दिसम्बर, 2010 के ब्रह्ममुहूर्त में वे अपनी बाहरी आँखों से जिन भगवान् तथा भीतरी आँखों से निज भगवान् आत्मा को निहारते हुए सकल संकल्प विकल्प पद प्रमुखता छोड़कर चले गए। उनकी भावनानुसार मुझे (आचार्य सुनीलसागर) को अंकलीकर परम्परा का चतुर्थ पट्टाधीश बनाया गया। उनके आदर्श ही हमारे लिए उजाले हैं।

जैन जीवन शैली की आधुनिक समय में उपयोगिता

- डॉ. सूरजमल बोबरा, इंदौर

आधुनिक समय में आखिर ऐसा क्या है, जो हमें अर्थात जैन व्यक्ति के जीवन में उसकी उपयोगिता को कसौटी पर कसना पड़ रहा है। कुछ व्यावहारिक प्रश्न खड़े होते हैं -

जैन जीवन शैली परम्परा गत रूप से जिस प्रकार जैन को संवारती है, उसकी दिनचर्या होती है, इसको लिखने का प्रयत्न करते हैं। आधुनिक समय में जीवन शैली ने कई नये आयामों को अपने जीवन के साथ जोड़ा है। जैसे खाना-पीना, रहना, विवाह करना, परिवार की सीमा बनाना आदि कई मुद्दे हैं। जिनने जीवन को बहुत प्रभावित किया है। जब इन नये आयामों का प्रवेश जीवन में हुआ तो लोगों को लगा कि हमारा जीवन समृद्ध हो रहा है। शीघ्र गामी वाहनों से दूर-दूर जा पाना संभव हो पा रहा था। खाने में विविध स्वाद विस्तार पा रहे हैं। औद्योगिक विस्तार, विज्ञान के सान्निध्य में नई ऊँचाई छू रहा था। आवश्यकता और अनावश्यकता का कोई विभाजन नहीं रह गया है। दोनों मापदंड हीन हो रहे हैं। देश की समृद्धि लोगों के जीवन से हटकर राष्ट्र की आर्थिक व शस्त्र संबंधी श्रेष्ठता, पर केन्द्रित हो गई।

इस भौतिक परिवर्तन ने आध्यात्मिक सोच और ज्ञान के दार्शनिक दृष्टिकोण को मार्ग से हटा दिया। परिवर्तन भौतिक सुखों का वृद्धिकर्ता और मनुष्य के मन में इन भावनाओं का पोषक हो गया कि वह बहुत शक्तिशाली है वह सब कुछ कर सकता है। इस सोच ने प्रकृति के विरुद्ध असीमित गतिविधियां प्रारंभ कर दी। मनुष्य का प्रारंभ से यह इतिहास रहा है कि वह प्रकृति से उपजा प्रकृति द्वारा पोषित प्राणी है। प्रकृति द्वारा सुझाये मार्ग से चलकर वह सुख शान्ति से जीवन-यापन कर सकता है।

आधुनिकता द्वारा प्रदत्त मेसमेरिज्म (मोहने की कला) से जीवन की नई परिभाषा हो गई, उसे समझें –

(1) भोजन जो चाहे सो खाओ - बीमार हो जाओ तो दवाई उपलब्ध है।

(2) तेज चलो, आकाश में उड़ो, समुद्र में लंबी दूर तक आओ जाओ, उसको चलाने, उड़ान के लिए पेट्रोल, डीजल जो भी चाहिए वह उपलब्ध है। उस पर खूब खर्च करो। अर्थ असंतुलन हो जाये तो कोई बात नहीं।

(3) उद्योगों और खेतों, खदानों से बिजली से अधिक उत्पादन कर अर्थ संचय कर सकते हैं। जरूरतमंदों को बेच सकते हैं और धन अर्जित कर सकते हैं। भविष्य की मानव जाति के लिये क्या सोचना है? पर्यावरण खराब हो तो हो।

(4) शस्त्रों का अधिक उत्पादन कर के दूसरे देश के लोगों को पराधीन बनाकर उनका शोषण कर सकते हैं। डर पैदा करने के लिए शस्त्र चाहिए। निर्भयी नहीं डरा आदमी चाहिए। दूसरे देशवासी मरे तो मरे। पुराने निर्माण खंडित हो तो हो।

(5) ज्ञान - विज्ञान के विस्तार से हम शक्तिशाली हो गये हैं। भगवान का क्या काम है? भगवान को किसने देखा? भले ही हम कोरोना या कैंसर जैसे रोगों से ग्रस्त हो जाए।

(6) पार्थिव वस्तुओं का मैनेजमेंट सीखो और चलते रहो। मरने की क्या सोचना? साँसें भले ही चलती रहे, शरीर बीमार हो तो हो पर निरुपयोगी जीवन के स्वामी बने रहो।

(7) इतिहास, भूगोल, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, पढ़ो। आध्यात्मिक शास्त्र की क्या आवश्यकता है? आध्यात्म तो अनदेखे की साधना है।

(8) जब तक ज्ञान-विज्ञान विकसित नहीं हुए थे तब तक भगवान की भूल भुलैया, मन बहलाने के लिए आवश्यक थी। अब टेलीफोन है, टी.वी. है, मोबाईल है और न जाने कितने कितने तरीके है मन बहलाने के। जरूरत कम और मनोरंजन के साधन अधिक, मनोरंजन घोटने वाला हो गया है। एकांगी बना रहा है।

(9) उन्मुक्त सेक्स सुख लेने के लिए पैसा है और यदि दूसरे पक्ष को पैसे की जरूरत है तो यह विधा भी मनुष्य के हाथों में है। शादी करके बंधन क्यों?

(10) स्त्री-पुरुष की आपसी पराधीनता न हो जाये, इसलिए परिवार की जरूरत नहीं।

(11) कोई कहे तो भ्रमों की अवधारणाओं ने धर्म को घातक बना दिया। जो घातक हो, उसकी जरूरत क्या है?

मोटी-मोटी बातों का संज्ञान यहाँ लिया गया है। भौतिक सुख-साधनों का अंबार होने के बाद भी मनुष्य बैचेनी एवं मानसिक विकृति से "बच नहीं पा रहा है। उसको कई भय और अप्राकृतिक अनिवार्यतायें सुख से जीने नहीं दे रही हैं। वे भय और अप्राकृतिक अनिवार्यताएँ आखिर हैं क्या? उसे भी एकत्र करके देख लेते हैं :-

(1) मनुष्य का जीना मरना लगा रहता है। कई वैज्ञानिक शोधों के बावजूद अप्राकृतिक ढंग से भले ही इन्सान पैदा कर लो पर वह मरेगा तो सही। इसको रोकने का कोई मार्ग नहीं बन पा रहा है।

(2) किसी व्यक्ति से पूछो क्या वह मरना चाहता है? धर्म, कर्म, मर्म का ज्ञाता होगा तो वह भी कहेगा नहीं। पर मरना तो तेरे बस में नहीं। अर्थात तेरे को सब छोड़कर जाना है। फिर तू शक्तिशाली कहाँ हुआ?

(3) मरना क्या तुम्हारी पराजय है? इसका उत्तर देना कठिन है?

(4) कोई स्वर्ग का रास्ता बताता है, कोई समाधि का। पर देखा यह जाता है कि मरने वाला शोक ग्रस्त जाता है और रह गये लोग शोक ग्रस्त रहते है। रोना ही रोना। पर ध्यान रहे कुछ ही समय के लिए।

इस नई जीवन शैली ने दुःखों को बढ़ाया। अर्जन का, छूट जाने का दुःख। परिश्रम से इकट्ठा करो और छोड़ जाओ।

जीवन मूलतः प्रकृति के साथ चला / प्रकृति और अपनी जरूरत के हिसाब से मनुष्य ने नियम बनाये-उन नियमों को धर्म का नाम दिया। यह नियम सब साथ रहे टकराहट न हो, इसे ध्यान में रखकर बने थे। इन नियमों में वे नियम भी थे,

जो जीवन क्यों, का उत्तर देते थे। इन नियमों में, अलग-अलग विचारकों ने कई परिवर्तन सुझाये। इन परिवर्तनों को, आधार बनाकर विचारकों ने उसे अलग-अलग धर्म कह दिया यहाँ गाड़ी पटरी से उतर गई। अलग-अलग धर्म, अहंकार और जिद के कारण, संघर्ष के कारण बन गये। इन धर्मों का ढांचा बनाकर जो प्रभाव उसने जीवन चलने में डाला उसने जीवन शैली को भी प्रभावित किया। उदाहरण के लिये इस्लाम जब जीवन में व्यवहार बनकर उतरा तो भोजन में माँस, उलटे हाथ धोना, एक सप्ताह में एक बार स्नान, बहु विवाह, निकट के रिश्तेदारों में आपस में शादी आदि ने हिन्दू और जैन धर्म से व्यवहार में 36 का आंकड़ा बना लिया। ऐसा इस्लाम, भारत के रहने वालों के व्यवहार से बहुत भिन्न था। मुसलमानों ने युद्ध, मारकाट, दमन आदि का सहारा लेकर लोगों पर इसे थोपा। दमन के दबाव में कुछ बदले भी, पर आपसी द्वंद, घृणा, टकराहट बढ़ गई। बढ़ती चली गई। जैन धर्मावलंमियों का तो हिन्दू धर्मावलंबियों से भी पैना विभेद था। ऐसा सब धर्मों के प्रचार-प्रसार ने टकराहट की वृद्धि की। जितने धर्म उतने समूह। आपस में लड़ने वाले उतने ही व्यवहार के फार्मूले। इन सब भौतिक व धार्मिक परिवर्तनों ने वर्तमान में एक जीवन शैली बना दी। जिसके कुछ मुद्दे हमने ऊपर देखे हैं। नई जीवन शैली ने आखिर हमें कौन से नुकसान पहुँचाये हैं।

(1) मनुष्य को इसने अधिक स्वार्थी बनाया है।

(2) मनुष्य अधिक अभक्ष्य भोजन करने लगा है, इससे वह अधिक तामसी प्रकृति व प्रवृत्ति का हो गया है। उसका विवेक, क्रूरता व स्वार्थ का पक्षधर हो गया है।

(3) जितने भी असाध्य रोग विश्व में फैले है वे सब वैज्ञानिक प्रयोगों के असंतुलित उपयोग के कारण पैदा हुए हैं। अभक्ष्य भोजन व भौतिक उपलब्धियों का असंतुलित उपयोग इसका कारण है।

(4) जनसंख्या में असंतुलित वृद्धि ने कई राष्ट्रों के लिये समस्या पैदा कर दी है। यह जीवन व चरित्र के स्वरूप को न समझने के कारण हुआ है। भोजन का स्वरूप इसका मुख्य कारण है।

(5) धर्म के भिन्न-भिन्न आकार लेने के बाद धर्म से स्वार्थ साधने के मार्ग निकाल लिये गये है। साधु, संसारी व समाज सबके लिये यह घातक सिद्ध हुआ है।

(6) स्त्री और पुरुष के संबंध केवल शरीर सुख पर केन्द्रित होते जा रहे हैं, जिसने परिवार संस्था को खंडित किया है वास्तव में स्त्री पुरुष के संबंध संसार गठन की आधारभूत कड़ी हैं।

(7) आध्यात्मिक दृष्टि से विचार नहीं करना और दार्शनिक अवधारणाओं की उपेक्षा से जीवन केवल भौतिक संघर्ष का केन्द्र बन गया है। शांति का अभाव और अधिक तृष्णा का जीवन के सभी क्षेत्रों में फैलाव, आपसी विश्वास को भयंकर हानि पहुँचा रहा है।

वर्तमान काल में धर्मों के द्वारा उपरोक्त दु:खों से मुक्ति दिलाने का कोई नि:स्वार्थ तरीका नहीं विकसित हो पाया है। जैन धर्म अवश्य व्यावहारिक मार्ग सुझाता है। जिसके पालन से जीवन उपयोगी बन सकता है। विचार करके देखते है –

(1) जैन धर्म कहता है सबकी बात समझो और उनके अनुकूल व्यवहार करो। धर्म और कर्म दोनों क्षेत्रों में इसके प्रयोग से आपसी अविश्वास और संघर्ष समाप्त हो जाता है। अधिकतर साम्प्रदायिक झगड़े, आर्थिक झगड़े, परिवार के झगड़े, स्त्री-पुरुष के झगड़े, दो देशों के झगड़े सब विचारों के अतिवादी सोच को समाप्त करने से समाप्त हो सकते हैं। जैन धर्म के एक फार्मूले को व्यवहार को देखें। एक धार्मिक विषयों के विश्लेषणकर्ता पंडित ने कहा है - जैन धर्म में मोक्ष मार्ग श्रेष्ठ है, यदि उसके पालन में कठिनाई आती है, तो सीमा में उन नियमों का पालन करो और धीरे-धीरे विकास कर लो। ऐसा श्रावक भी मोक्षमार्गी कहलायेगा। यह सबको साथ लेकर चलने का सिद्ध उपाय है। इससे उदार दृष्टि कोण क्या हो सकता है?

यदि यह दृष्टिकोण अपना लिया जाये तो आपसी राजनैतिक, आर्थिक व धार्मिक संघर्ष, जमीन- जायदाद के झगड़े सभी टल सकते हैं। समाप्त हो सकते हैं। पैदा ही नहीं होंगे।

(2) जैन व्यवहार कोई प्रमाण-पत्र पाने जैसा नहीं है। यह तो प्रत्येक जैन के जीने का तरीका है। जैसे माँस-मछली अंडा मत खाओ- क्यों? इसलिए कि उसमें दूसरे के जीवन का हनन होता है। प्रकृति, जिसका जाया मनुष्य है और दूसरे प्राणी भी है दोनों एक-दूसरे को कैसे मार सकते है? अहिंसा का पालन इसी का नाम है। कभी कोई कीड़ा -मकौड़ा गलती से आप के पैर से दबकर मर गया, तो यह चाहकर मारना नहीं है, इसलिए आप उसके मर जाने के बाद भी जैन बने रहेंगे। और अहिंसक रहेंगे, यदि सब यह दृष्टिकोण अपना ले तो सब जैन कहलाने लगेंगे। जैन व्यवहार बोझ नहीं है। हमारे स्वभाव, भाव और सबके अस्तित्व को मान्यता देना है। इससे जीवन चलाने में कोई कठिनाई नहीं होती।

हम RO का पानी पीते है- उसके सोच का आधार है कीटाणु मुक्त पानी पीना। छने हुए पानी का मूल आधार भी कीटाणु मुक्त पानी पीना ही है। वे सब लोग देखले कि RO का जल कीटाणुओं को अलग नहीं कर रहा है। उन्हें मार रहा है। कीटाणु मुक्त-छना हुआ पानी यह वैज्ञानिकों द्वारा अनुमोदित जल है और यह जैन आचरण का प्राथमिक मुद्दा है।

(3) एक बार हम महात्मा आत्मानंदजी के दर्शन के लिए सपरिवार गये। मेरे भतीजे ने महात्मा जी से पूछा महाराज मेरे को बार-बार विदेश यात्रा करना पड़ती है। बहुत कपड़े चाहिए, एयरपोर्ट जाने के लिए फैक्ट्री जाने के लिए कार चाहिए-यदि इनके उपयोग को परिग्रह कहूं, और इन पर बंधन लगा दूं तो काम कैसे करूं? महात्मा जी का उत्तर था- उन सब को बंद करने के लिए कौन कहता है? कहते तो यह हैं कि आगे तक की सोच कर लो और तय कर लो कि इससे अधिक नहीं रखेंगे। 2 कार है, इसके बाद नहीं लेंगे। 6 सूट है तो इसके बाद नहीं बनवायेंगे। जो निश्चित किया उस पर दृढ़ रहेंगे – इसे परिग्रह प्रमाण कहते हैं। श्रावक के लिये यही व्रत है। काम नहीं करना ऐसा संदेश कभी जैन

धर्म ने नहीं दिया।

यदि जैन जीवन के इस दृष्टिकोण को जीवन में उतार लिया जाये तो इसे पालन करने वालों को मन पर नियंत्रण करना आ जायेगा। वस्तुयें उपयोगिता की भी सीमा में होना चाहिए। धन आवश्यकता की सीमा में ही होना चाहिए। मन पर नियंत्रण करना सीखना, अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा व्यक्ति वस्तुओं की अनावश्यक संग्रह वृत्ति में उलझ जायेगा।

(4) जैन रूप में जीवन लेना अपने आप में ज्ञान को समर्पित व्यक्तित्व के रूप में प्रकट होना है। ज्ञान रहित व्यक्ति जैन हो ही नहीं सकता। पैदा होते ही जैन व्यक्ति को णमोकार मंत्र सुनाया जाता है। बालक का तंत्र प्रारंभ से ही अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु से जोड़ दिया जाता है, जो उसे ज्ञान-ध्यान और अंतर चेतना से जोड़ देता है। यह कोई मूढ़ता नहीं। यह मनोवैज्ञानिक तरीका है। जैन ज्ञान के मार्ग पर स्वतः ही चल देना है। जैनाचार्यों ने कहा है जीवन में जैन जीवन शैली पर श्रद्धा और तदनुकुल जीवन पद्धति को अपना कर जैन होने का अधिकार पाया जा सकता है। इसके लिए न किसी जनेऊ की जरूरत है और न किसी हवन की। यह जीवन पद्धति विज्ञान सम्मत, मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों के आधार पर आधारित है तथ्यों के निरन्तर पठन-पाठन उनके निरन्तर अभ्यास से विकसित की जा सकती है। कुछ छोड़ना नहीं। जैन जीवन शैली की आधुनिक समय में उपयोगिता कोई अनोखी बात नहीं है, पर दुर्भाग्य है कि लोग अन्य धर्माधता में आँख बंद किये रहते हैं। भटकाव और रूढ़ता लोगों को अविश्वसनीय ढंग से मार्ग भटका देती है। ऋषभ द्वारा प्रवर्तित जीवन, कर्म और दर्शन आधारित था और भावना से समस्त जम्बूद्वीप वासी बिना जैन का सम्बोधन पाये जैन थे। कालान्तर में रामकाल के पूर्व जैन चिंतन की जगह वैदिक चिंतन का फैलाव हुआ और संघर्ष प्रारंभ हुआ। उसके बाद से अब तक संघर्ष किसी न किसी रूप में मौजूद है।

एक बात पर विश्वास करना चाहिए कि जैन अपनी जीवन शैली के कारण ही प्रगतिशील समाज है। उद्योग, व्यापार, शिक्षा, उम्र, सफलता, महिला विकास सब में जैन धर्मावंलबी अपनी कार्य शैली और जीवन शैली से अग्रणी है। इसके लिए उन्हें केवल व्यावहारिक जैन जीवन शैली से जुड़ा रहना पड़ता है। सफलता चाहने वाले इसे अपना कर तो देखे। जैन जीवन में हारने का नहीं जीतने का नाम है।

सरल शब्दों में जैन – व्यवहार

(1) अभक्ष्य, हिंसा से बने, सड़े, गले भोजन को न करें। रात्रि भोजन में इन सब बातों का ध्यान नहीं रहता है इसलिए रात्रि भोजन मत करो।

(2) किसी दूसरे के धन के प्रति लालसा मत करो।

(3) झूठ बोलने से अपना मन भी डरा रहता है अतः झूठ न बोलें, किसी को धोखा न दें।

(4) स्त्री केवल यौन उत्तेजना की पूरक नहीं है। वह परिवार को बांधने वाला रक्षा सूत्र है अतः उसे उसका ठीक स्थान दो।

(5) अपने हृदय को अहंकार, क्रोध से भरा और ईर्ष्या से भरा न रखो।

(6) न्याय मार्ग से कभी कदम विचलित न हों।

(7) हृदय से देशोन्नति रत रहें।

(8) वस्तु स्वरूप पर विचार करें, सब हृदय से, अनेकांत मय सोच रखें।

(9) अपरिग्रह का अर्थ है अपनी आवश्यकता के अनुकूल वस्तुएं रखो, उनकी लालसा अनावश्यक रूप से बढ़ने मत दो।

(10) जरूरतमंद की मदद का भाव रखो। उसे भी इस सरल व्यवहार से अवगत रखो।

(11) मूर्ति पूजा, व्रत, उपवास, हवन, जुलूस निकलना, सभा करना ही धर्म नहीं है – उपरोक्त व्यवहार का पालन भी धर्म है। यदि उपरोक्त व्यवहार का पालन कोई करता है तो वह धार्मिक है। उपरोक्त व्यवहार का ज्ञान सर्व श्रेष्ठ होता है।

(12) भगवान कुछ नहीं करते। वह मानस – आत्मा को शक्ति और मार्गदर्शन देता रहता है। वह तो निरंजन, निराकार, ज्योतिस्वरूपी और चिंतामणि है।करेंगे तो केवल हम।

इस व्यवहार की उपयोगिता

(1) दूसरे के जीवन की हानि नहीं होगी। शरीर स्वस्थ रहेगा समय पर उचित नियंत्रण रहेगा।

(2) अनावश्यक जोड़ तोड़ से बचेगें।

(3) भय मुक्त जीवन रहेगा। जैन व्यवहार भय मुक्ति का घोषणा पत्र है।

(4) परिवार को सुख और शांति मिलेगी। जैन व्यवहार को मूर्त रूप देने से मदद मिलेगी।

(5) घमंड और क्रोध से स्वभाव कड़वा हो जाता है। ईर्ष्या से जलन होते रहती है।

(6) अन्याय करने वाला क्रोधी हो जाता है।

(7) देशोन्नति का भाव सब से बड़ा धर्म है।

(8) प्रत्येक प्रकार के संघर्ष से बचने का यह श्रेष्ठतम तरीका है।

(9) राष्ट्रवाद, साम्यवाद, समाजवाद, मानवता, गरीबी उन्मूलन यह सब अपरिग्रह होने से मूर्तरूप ले लेते हैं।

(10) विश्व में फैली असमानता को समाप्त करने का यह श्रेष्ठ तरीका है।

(11) मूर्ति पूजा और उस के सभी स्वरूप अपनाते रहने से हमें सदैव याद रहेगा कि हमें व्यवहार में इस कार्यक्रम को अपनाना है।

(12) भगवान के लिए कोई पार्थिव मंदिर नहीं चाहिए। मन ही मंदिर है।हमारे प्राचीन तीर्थ ही पर्याप्त हैं।

विश्व के वर्तमान दिखते दुःख, मनुष्य की अपनी करनी का परिणाम है। उस का अपनापन उस के लिए दोषी है। जैन व्यवहार अपनाइए और उन दुखों से मुक्ति पाइये। उसके लिए न कुछ करना है, न कुछ खर्च करना है। न यात्रा करना है। बस मन को काबू में करना है। यदि हम जैन जीवनशैली अपनायेंगे तो तीर्थ, मंदिर तथा समाज सभी सुरक्षित रहेंगे।

काशी में जन्में तीर्थंकर चन्द्रप्रभ व पार्श्वनाथ भगवान की शिक्षाओं की प्रासंगिकता

- डॉ. सुनील जैन 'संचय' ललितपुर

सर्वधर्म सदभाव की नगरी है काशी। विभिन्न धर्मों के धार्मिक सरोकार से जुड़ी इस पावन नगरी की इन दिनों चर्चा चहुँओर है। देश के प्रधानमंत्री ने काशी विश्वनाथ कॉरिडॉर सहित अनेक सौगातें काशी को हाल ही में दी हैं। बनारस को लोग मंदिरों का शहर, भारत की धार्मिक राजधानी, शिव की नगरी, दीपों का शहर आदि विशेषण भी देते हैं. प्रसिद्ध अमरीकी लेखक मार्क ट्वेन लिखते हैं कि "बनारस इतिहास से भी पुरातन है, परंपराओं से पुराना है, किंवदंतियों से भी प्राचीन है और जब इन सबको एकत्र कर दें, तो उस संग्रह से भी दोगुना प्राचीन है।"

मैंने अपने जीवन निर्माण के पांच वर्ष वाराणसी में व्यतीत किए हैं, इसलिए काशी की संस्कृति से मेरा निकटता से परिचय है। गंगा का पावन जल और शांत आनंदमयी घाटों का अनुभव कितना मनमोहक होता है शायद आप लोग जानते होगे, बनारस के कुछ अलग ही रहस्य हैं जो हर शहर से भिन्न है।

बनारस का हर शाम इतना सुहाना लगे।
इसे भुलाने में कई सदियाँ कई जमाना लगे।।

काशी यानि वाराणसी एक धार्मिक - सांस्कृतिक नगरी एवं पवित्र नगरी मानी जाती है क्योंकि इस नगरी में सभी सम्प्रदायों की आस्था जुड़ी है जिसमें जैन धर्मावलंबियों की आस्था भी जुड़ी है क्योंकि पवित्र गंगा नदी के बीच वसी नगरी काशी में चार तीर्थंकरों का जन्म हुआ, जन्म की ही नहीं चार-चार कल्याणक भी हुए हैं। सप्तम तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ, अष्टम तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ, ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांशनाथ और तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ ने जन्म लेकर वाराणसी नगरी को पवित्र बनाया है। मेरा सौभाग्य रहा कि पवित्र गंगा किनारे सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ भगवान की जन्मभूमि से सुशोभित जैन घाट पर स्थित सुप्रसिद्ध स्याद्वाद महाविद्यालय में मुझे अध्ययन करने का अवसर मिला।

ऐतिहासिक अवलोकन से स्पष्ट होता है कि जैन धर्म का प्रभाव भी इस नगरी पर रहा है। 'संयम' और 'सहनशीलता' की प्रतिमूर्ति जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म काशी में पौष कृष्णा एकादशी को हुआ था। तत्कालीन काशी नरेश महाराजा विश्वसेन आपके पिता एवं महारानी वामादेवी आपकी माता थीं। शहर के भेलुपुर इलाके में तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि है। यही वो जगह है जहाँ जैन धर्म के 23 वें तीर्थांकर की जन्म, कर्म और तप भूमि है। जो आज जैन धर्मावलम्बियों के लिए बड़ा स्थल है।

यहां आज जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर का भव्य मंदिर है। पार्श्वनाथ के जन्म स्थल भेलूपुर मुहल्ले में विशाल, कलात्मक एवं मनोरम मन्दिर का निर्माण हुआ है। मन्दिर में काले पत्थरों से निर्मित चार फिट ऊंची पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है। 6273 वर्ग फिट क्षेत्रफल में यह मन्दिर परिसर है। राजस्थानी कारीगरों द्वारा राजस्थानी पत्थरों से निर्मित राजस्थानी शैली का यह मन्दिर अदभुत एवं अद्वितीय है। मन्दिर के दिवारों पर शिल्पकारों द्वारा सुन्दर ढंग से कलात्मक चित्रों को दर्शाया गया है।

इस मंदिर में दर्शन के लिए हर रोज ढ़ेरों श्रद्धालु आते हैं। पार्श्वनाथ ने अज्ञान, आडंबर, अंधकार और क्रियाकाण्ड के मध्य में क्रांति का बीज बनकर जन्म लिया था।

उन्होंने हमारे भीतर सुलभ बोधि जगाई, व्रत की संस्कृति विकसित की। बुराइयों का परिष्कार कर अच्छा इंसान बनने का संस्कार भरा। पुरुषार्थ से भाग्य बदलने का सूत्र दिया। भगवान पार्श्वनाथ क्षमा के प्रतीक और सामाजिक क्रांति के प्रणेता हैं। उन्होंने अहिंसा की व्याप्ति को व्यक्ति तक विस्तृत कर सामाजिक जीवन में प्रवेश दिया, जो अभूतपूर्व क्रांति थी। उनका कहना था कि हर व्यक्ति के प्रति सहज करुणा और कल्याण की भावना रखें। उनके सिद्धांत व्यावहारिक थे, इसलिए उनके व्यक्तित्व और उपदेशों का प्रभाव जनमानस पर पड़ा। आज भी बंगाल, बिहार, झारखंड और उड़ीसा में फैले हुए लाखों सराकों, बंगाल के मेदिनीपुर जिले के सदगोवा ओर उडीसा के रंगिया जाति के लोग पार्श्वनाथ को अपना कुल देवता मानते हैं। पार्श्वनाथ के सिद्धांत और संस्कार इनके जीवन में गहरी जड़ें जमा चुके हैं। इसके अलावा सम्मेदशिखर के निकट रहने वाली भील जाति पार्श्वनाथ की अनन्य भक्त है।

भगवान पार्श्वनाथ की जीवन-घटनाओं में हमें राज्य और व्यक्ति, समाज और व्यक्ति तथा व्यक्ति और व्यक्ति के बीच के संबंधों के निर्धारण के रचनात्मक सूत्र भी मिलते हैं। इन सूत्रों की प्रासंगिकता आज भी यथापूर्व है। हिंसा और अहिंसा का द्वन्द भी हमें इन घटनाओं में अभिगुम्फित दिखाई देता है। ध्यान से देखने पर भगवान पार्श्वनाथ तथा भगवान महावीर का समवेत् रूप एक सार्वभौम धर्म के प्रवर्तन का सुदृढ़ सरंजाम है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा उनके लोकव्यापी चिंतन ने लम्बे समय तक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया।

उनका धर्म व्यवहार की दृष्टि से सहज था, जिसमें जीवन शैली का प्रतिपादन था। राजकुमार अवस्था में कमठ द्वारा काशी के गंगाघाट पर पंचाग्नि तप तथा यज्ञाग्नि की लकड़ी में जलते नाग-नागिनी का णमोकार मंत्र द्वार उद्धार कार्य की प्रसिद्ध घटना यह सब उनके द्वारा धार्मिक क्षेत्रों में हिंसा और अज्ञान विरोध और अहिंसा तथा विवेक की स्थापना का प्रतीक है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने मालव, अवंती, गौर्जर, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, अंग-नल, कलिंग, कर्नाटक, कोंकण, मेवाड़, द्रविड, कश्मीर, मगध, कच्छ, विदर्भ, पंचाल, पल्लव आदि आर्यखंड के देशों में विहार किया। मध्यप्रदेश के छतरपुर जिला में सुप्रसिद्ध जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि स्थित है जहाँ भगवान पार्श्वनाथ का समवशरण आया था। उनकी ध्यानयोग की साधना वास्तव में आत्मसाधना थी। भय, प्रलोभन, राग-द्वेष से परे। उनका कहना था कि सताने वाले के प्रति भी सहज करुणा और कल्याण की भावना रखें।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भारतवर्ष में सर्वाधिक प्रतिमाएं और मंदिर हैं। उनके जन्म स्थान भेलूपुर वाराणसी में बहुत ही भव्य और विशाल दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन मंदिर बना हुआ है। यह स्थान विदेशी पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र है। पार्श्वनाथ की जयंती पर जहां वाराणसी सहित पूरे देश में जन्मोत्सव धूमधाम से श्रीजी की शोभायात्रा के साथ मनाया जाता है।

चौबीस तीर्थंकरों में भगवान पार्श्वनाथ लोकजीवन में सर्वाधिक प्रतिष्ठित हैं। इस आर्यखंड-भारतदेश के प्रत्येक राज्य में भगवान पार्श्वनाथ विभिन्न विशेषणों के साथ पूजे जाते हैं। कहीं वे "अंतरिक्ष पार्श्वनाथ" के रूप में प्रतिष्ठित हैं तो कहीं देवालय "चिन्तामणि पार्श्वनाथ" की जय से गुंजित होता है, कहीं वे "तिखाल वाले बाबा" के रूप में विराजमान हैं।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भक्ति में अनेक स्तोत्रों का आचार्यों ने सृजन किया है, जैसे- श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र, कल्याण मंदिर स्तोत्र, इन्द्रनंदि कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र, राजसेनकृत पार्श्वनाथाष्टक, पद्मप्रभमलधारीदेव कृत पार्श्वनाथ स्तोत्र, विद्यानंदिकृत पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि। स्तोत्र रचना आराध्यदेव के प्रति बहुमान प्रदर्शन एवं आराध्य के अतिशय का प्रतिफल है। अतः इन स्तोत्रों की बहुलता भगवान पार्श्वनाथ के अतिशय प्रभावकता का सूचक है। भारतीय संस्कृति की प्रमुख धारा श्रमण परम्परा में भगवान पार्श्वनाथ का ऐतिहासिक एवं गौरवशाली महत्व रहा है। भगवान पार्श्वनाथ हमारी अविच्छिन्न तीर्थंकर परम्परा के दिव्य आभावान योगी ऐतिहासिक पुरुष हैं। सर्वप्रथम डॉ. हर्मन याकोबी ने 'स्टडीज इन जैनिज्म' के माध्यम से उन्हें ऐतिहासिक पुरुष माना। वर्तमान वैज्ञानिक युग में भी उनके द्वारा प्रतिपादित जीने की कला और संदेश नितान्त प्रासंगिक है।

जीवन के अंत में श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन झारखंड स्थित सुप्रसिद्ध शाश्वत जैन तीर्थ श्री सम्मेदशिखर के स्वर्णभद्रकूट नामक पर्वत से निर्वाण प्राप्त किया। इन्हीं की स्मृति में इस तीर्थक्षेत्र के समीपस्थ स्टेशन का नाम पारसनाथ प्रसिद्ध है। सम्पूर्ण देश के लाखों जैन धर्मानुयायी इस तीर्थ के दर्शन-पूजन हेतु निरंतर आते रहते हैं।

गंगा नदी के तट पर बना हुआ चंद्रप्रभ जिनालय स्थापत्य कला को सुशोभित कर रहा : आठवें तीर्थंकर चंद्रप्रभ का जन्म भी पौष कृष्ण एकादशी को ही राजघराने में हुआ था। इनके माता पिता बनने का सौभाग्य चंद्रावती के महाराजा महासेन और लक्ष्मणा देवी को मिला। भगवान चन्द्रप्रभ के जन्म, तप एवं ज्ञान कल्याणक स्थली क्षेत्र सुरम्य गंगातट पर चन्द्रावती गढ़ के भग्नावशेषों के बीच स्थित है। क्षेत्र पर चैत्र कृष्णा 5 को वार्षिक मेला लगता है। गंगा किनारे चंद्रावती में आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ स्वामी ने जन्म लिया था। वहां चन्द्रप्रभ का भव्य मंदिर आस्था का केंद्र है लेकिन गंगा की कटान की वजह से यह तीर्थ बदहाल पड़ा है। वर्तमान मंदिर की वेदी में मूलनायक तीर्थंकर चंद्रप्रभ की श्वेत पाषाण की पद्मासन प्रतिमा है। मंदिर का शिखर बहुत ही सुंदर बना हुआ है। यहां से गंगा का मनोहारी दृश्य बहुत ही आकर्षक लगता है जो अवलोकनीय है। गंगा नदी के तट पर बना हुआ जिनालय स्थापत्य कला को सुशोभित कर रहा है। मंदिर का निर्माण प्रभुदास जैन ने किया था। इनके परिवारजन श्री अजय जैन, प्रशांत जैन आरा आदि आज भी इस क्षेत्र की देख-रेख में संलग्न हैं। चंद्रावती में आगामी फरवरी 2022 में आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी के सान्निध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भी प्रस्तावित है। जैन तीर्थंकरों के दर्शन के लिए वर्ष भर देश के कोने-कोने से लाखों की तादाद में जैन धर्मावलंबी काशी आते हैं।

भगवान चंद्रप्रभ हमारे जीवन दर्शन के स्रोत हैं, प्रेरक आदर्श हैं। उन्होंने जैसा जीवन जीया, उसका हर अनुभव हमारे लिए साधना का प्रयोग बन गया। भगवान चंद्रप्रभ को इतिहास का स्वरूप धारण कराने में आचार्य समन्तभद्र स्वामी का बड़ा हाथ है। जब उन्हें भस्मक व्याधि हो गयी थी उस समय काशी में उनके साथ जो घटनाक्रम हुआ वह ऐतिहासिक था। इस ऐतिहासिक घटना ने जनमानस पर गहरा प्रभाव छोड़ा और कलाकार चन्द्रप्रभ की कलाकृतियां गढ़ने में तत्पर हो गए और श्रावक जन भगवान चन्द्रप्रभ के चमत्कार के प्रति अधिक आस्थावान और विश्वस्त हो गए। चंद्रावती के अलावा देवगढ़, खजुराहो, सोनागिर, तिजारा, ग्वालियर, श्रवणबेलगोला, बरनावा, मांगीतुंगी आदि में चन्द्रप्रभ भगवान की प्राचीन व चमत्कारी प्रतिमाएं विराजमान हैं।

तीर्थंकर चन्द्रप्रभ अपनी अद्वितीय धवल रूप गरिमा में वीतरागता का वैभव बिखेरने के साथ अपने अद्वितीय अतिशय और चमत्कारों के कारण भी लोकप्रिय संकट मोचक रहे हैं। तीर्थंकर चन्द्रप्रभ का आदर्श मानव को सावधान करता है, उसे जगाता है और कहता है कि हमारी तरफ देख, हमने राजा के वैभव को ठुकराया और आकिंचन व्रत अंगीकार किया और तू इस नाशवान माया की ममता में पागल हुए जा रहा है।

वाराणसी देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी का संसदीय क्षेत्र है। पिछले दिनों उन्होंने काशी विश्वनाथ कॉरिडॉर देश को समर्पित कर ऐतिहासिक कार्य किया है। वाराणसी में ही राजघराने में जन्में तीर्थंकर चन्द्रप्रभ एवं पार्श्वनाथ भगवान के जन्मकल्याणक दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री से निवेदन है कि काशी के चार तीर्थंकरों की जन्मभूमि के विकास, संरक्षण और संवर्द्धन की ओर भी अपना ध्यान देने का कष्ट करें। चन्द्रप्रभ भगवान की जन्म भूमि पर गंगा घाट के तट पर चंद्रावती में जो मंदिर बना है उस पर तो तुरंत ध्यान देने की जरूरत है, इस समय जीर्णोद्धार बहुत जरूरी है। आशा है प्रधानमंत्री इस ओर जरूर ध्यान देंगे ताकि संस्कृति की यह महान धरोहर संरक्षित और सुरक्षित हो सके।

भगवान महावीर के जीवन के संदर्भ में व्याप्त भ्रांतियाँ

- पं. नवीन कुमार जैन "शास्त्री", सागर

कुण्डग्राम (कुण्डलपुर) को जन्मभूमि मानने की अपनी पुरानी धारणा को बट्टे खाते में डालने के पीछे क्या कारण थे तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी को पूरे समाज को यह नहीं बताना चाहिए था ? खैर, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। कमेटी को अपनी इस नई खोज का यथाशीघ्र पुनर्मूल्यांकन करते हुए 'जब जागे, तभी सवेरा' की कहावत को चरितार्थ करना चाहिए ?

इतिहास को बदलने की चेष्टा एक बड़ी भूल है। यह निर्विवाद है कि महावीर जन्म वैशाली में नहीं हुआ था। उनकी माता प्रियकारिणी अवश्य विशाला नगरी वैशाली के महाराज चेटक के यहां जन्मी थीं। इस तरह वैशाली महावीर की ननिहाल थी । उन्हें वैशाली का राजकुमार कहना या लिखना असंगत ही नहीं, अक्षम्य भी है। महाराजा चेटक के दस पुत्र थे । योग्य पुत्रों के रहते हुए धेवते (पुत्री के पुत्र) को राजकुमार कहने की प्रथा तो कहीं भी देखनें में नहीं आती। महावीर जैसा प्रतापी पुत्र **'उत्तमा आत्मनाख्याता:'** की श्रेणी में गणनीय रहा है, उन्हें **'मातुलात्ख्याता:'** की अधम श्रेणी में रखने की भूल का हमें तुरन्त परिष्कार करना चाहिए।

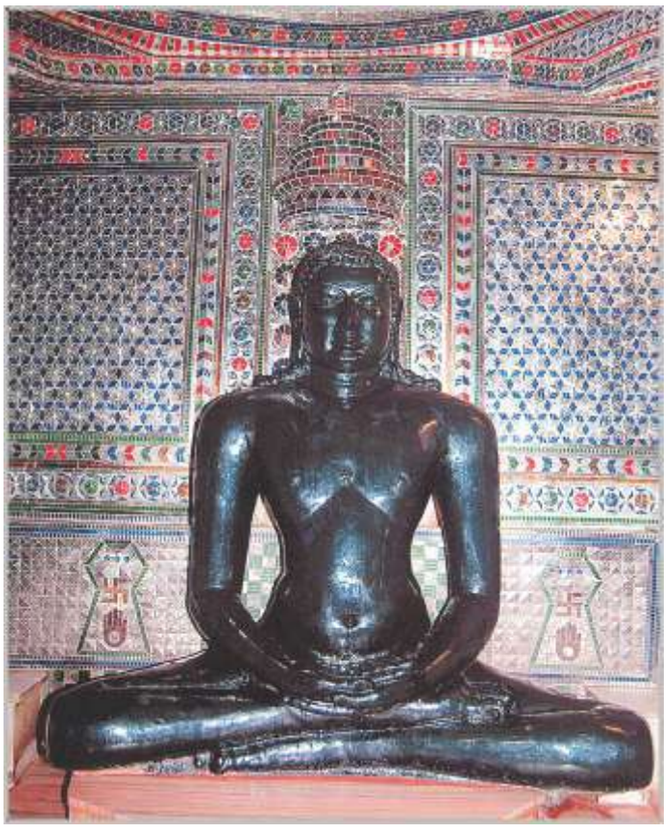

श्री १००८ भगवान महावीर, अतिशय क्षेत्र तेर, जिला उस्मानाबाद, महाराष्ट्र

सभी पुराणों में लिखा है कि कुण्डलपुर एक स्वतंत्र और प्रभावशाली गणराज्य था। उसके वैभव का प्रचुर वर्णन भी जैनशास्त्रों में पाया जाता है। उसके अधिपति महाराजा सिद्धार्थ भी एक शक्तिशाली, प्रतापी और स्वतंत्र राजा थे। कुण्डलपुर को वैशाली के एक सन्निवेश के रूप में स्वीकार करने से तो उसके स्वतंत्र राज्य होने पर ही प्रश्नचिन्ह लग जाएगा तथा लोगों को लगेगा कि महाराजा सिद्धार्थ अवश्य ही कोई साधारण राजा थे और उनका अपना कोई आभामंडल भी नहीं था । वैशाली के राजा के कारण ही उनका मान सम्मान था। पौराणिक वर्णन हमें इसकी अनुमति नहीं देते।

श्वेतांबर ग्रन्थ 'सूत्रकृतांग' आदि में महावीर को वैशालिक कहा गया है। इसका यह अर्थ निकालना ठीक नहीं होगा कि वह वैशाली के निवासी थे। श्वेतांवर अंग-साहित्य के सुप्रसिद्ध टीकाकार आचार्य शीलांक ने महावीर को वैशालिक कहे जाने के पीछे जो तर्क दिए हैं, वे विचारणीय हैं । वह लिखते हैं -

विशाला जननी यस्य, विशाल कुलमेव वा।
विशालं वचन चास्य, तेन वैशालिको जिन:।।

अर्थात्- १. जिनकी मां विशाला नगरी की थी, 2. जिनका कुल विशाल था तथा 3. जिनके वचन भी विशाल थे, वह कहलाते थे वैशालिक जिन।

वाह रे बुद्धि - प्रवण दिगम्बरों ! तुमने तो उन्हें वैशाली का निवासी ही बना दिया। वैशाली का राजकुमार कहकर उनके मामाओं के अधिकार पर भी पानी फेर दिया । क्या महावीर जैसे उदात्त पुरुष से भी ऐसी अनधिकृत चेष्टा की उम्मीद या परिकल्पना की जा सकती है ? नहीं, कभी नहीं। वह वैशाली के नहीं थे, इसे स्वीकार करना ही इस ऐतिहासिक भूल का प्रायश्चित्त होगा।

महावीर की जन्मभूमि के संदर्भ में यदि बौद्ध ग्रन्थों या श्वेतांबर साहित्य के आधार पर निर्णय लिया जाएगा तो फिर अनेक नई उलझने उत्पन्न होंगी। अनेक आगमविरुद्ध प्रसंगों को मानने की विवशता भी हमारे सामने उपस्थित हो सकती है। उनके अनुसार माता त्रिशला महाराजा चेटक की बहन थी, जबकि हमारे अनुसार वह उनकी पुत्री थी। हमारी मान्यता है कि महावीर अपने पिता सिद्धार्थ के अकेले पुत्र थे, जबकि उनके अनुसार उनका एक भाई नंदीवर्धन भी था। श्वेतांबर यशोदा से उनका विवाह होना मानते हैं और कहते हैं कि उनकी एक पुत्री थी, किन्तु हम इसे सिरे से नकारते हैं । श्वेताम्बर ग्रंथों में लिखा है कि बसाढ़ के निकट दो कुण्डग्राम थे - एक ब्राह्मण कुण्डग्राम और दूसरा क्षत्रिय कुण्डग्राम के ऋणभदत्त ब्राह्मण की पत्नी देवानंदा की कोख में आया और बाद में बयासी रात्रियों के बाद एक देव द्वारा उन्हें क्षत्रिय कुण्ड के महाराजा सिद्धार्थ की पत्नी त्रिशला की कोख में स्थापित किया गया। क्या गर्भापहरण की इस बेतुकी बात का भी हम समर्थन करेंगे ? हमारे युगपुरुष महापुरुष के वास्तविक पिता कौन थे, इस प्रश्न का उत्तर हमारे पास होगा ? कोई निर्णय करने से पहले इन सब बातों पर भी विचार करना चाहिए था।

महावीर की जन्मभूमि का निर्णय दिगंबर जैन शास्त्रों के अनुसार ही हो सकता है और होना भी चाहिए। सभी दिगंबर शास्त्र और पुराण उनकी जन्मभूमि कुण्डपुर या कुण्डलपुर को ही मानते हैं। कहीं कोई विवाद नहीं है। विवाद तो नए अनुसंधानकर्ताओं ने अपनी-अपनी बौद्धिक अटकलों से उत्पन्न कर दिया है। जहाँ तक दो कुण्डग्रामों की बात है, भगवती सूत्र का यह उल्लेख महत्वपूर्ण है - 'तीसेणं णालिंदा वाहिरियाए अदूरसामंते एत्थणं कोल्लाए णामं सण्णिवेसे होत्थ। सण्णिवेस बज्जओ। तत्थणं कोल्लाए सण्णिवेसे बहुलेणाम माहणे परिवई'।

इस कथन से स्पष्ट है कि वैशाली और नालंदा दोनों ही स्थानों के

समीप कोल्लाग सन्निवेश और दो-दो कुण्डग्राम थे। इस उल्लेख के आधार पर कुण्डलपुर (नालंदा) को जन्मभूमि मानने में कोई अड़चन शेष ही नहीं रहती।

वैशाली को महावीर की जन्मभूमि तो माना ही जा सकता। यह धारणा सर्वथा अस्वीकार्य एवं निर्मूल है। श्री पी.सी. राय चौधरी ने अपनी एक पुस्तक "Jainism in Bihar" में लिखा है 'दिगंबर सम्प्रदाय वालों नालंदा से दो मील दूर कृण्डलपुर नामक स्थान को महावीर की जन्मभूमि माना है।' श्री राधाकृष्ण चौधरी और श्री नरेशचंद्र मिश्र भी वैशाली को जन्मभूमि मानने को तैयार नहीं है। ये विद्वान्इस संदर्भ में पुनर्मूल्यांकन किए जाने पर जोर देते हैं।

सर्वश्री हर्मन जैकोवी, हार्नले और विसेंट स्मिथ जैसे पाश्चात्य विचारकों ने प्राचीन वैशाली के कोटिग्राम से कुण्डग्राम के विकास की बात कही है, जो भाषा विज्ञान की दृष्टि से ठीक नहीं है। प्रो. रघुवीर प्रसाद सिंह ने लिखा है - 'कोटि शब्द से कुण्डग्राम का विकास किसी भी प्रकार संभव नहीं है।' के.के.एम. कॉलेज, जमुई के प्रोफेसर डॉ. श्यामसुंदर प्रसाद ने अपनी शोधपरक पुस्तिका "महावीर का जन्मस्थान" में लिखा है कि महात्माबुद्ध ने कोटिग्राम में निवास करते समय दस सूत्रों का उपदेश दिया था, ऐसा उल्लेख संयुक्त निकाय में आता है। इससे स्पष्ट है कि यदि महावीर के समकालीन बुद्ध के समय में इस स्थान का नाम कोटिग्राम ही था, तो महावीर के लिए यह कुण्डग्राम नहीं हो सकता।'

एक तथ्य यह भी है कि लगभग आधी सदी तक वैशाली को महावीर की जन्मभूमि के रूप में प्रचारित और प्रसारित किए जाने के बाद भी जैनों का उसके साथ जुड़ाव नहीं हो सका है। वहां हर वर्ष महावीर जयंती का आयोजन भी सरकार की वैशाखी के सहारे ही होता आ रहा है। जैन समाज स्वतंत्र रूप से वहां कोई आयोजन नहीं करता। इसके विपरीत बिहार के तीर्थों की यात्रा करते समय सभी जैन बंधु कुण्डलपुर अवश्य जाते ही हैं। भगवान महावीर एवं उनके साथ जुड़ी विभूतियों से सम्बन्धित अनेक तीर्थ राजगृही, पावापुरी, गुणावा, नवादा आदि कुण्डलपुर के निकट ही हैं। वैशाली के आसपास ऐसे धार्मिक महत्व के स्थानों एवं वातावरण का नितान्त अभाव है, जो लोगों की श्रद्धा को अपनी ओर आकर्षित कर सके। यदि महावीर 30 वर्ष तक वैशाली में रहे होते तो वहां अनेक नए पुण्यक्षेत्र विकसित होने चाहिए थे। इसीलिए वैशाली आज तक उपेक्षित रही और कुण्डलपुर की तुलना में भविष्य में भी उपेक्षित रहेगी।

गर्भतिथि – 'आषाढ़ शुक्ला षष्ठी के दिन जबकि चन्द्रमा उत्तरापाद नक्षत्र में था राजा सिद्धार्थ की प्रियंकारिणी रानी ने रात्रि के रौद्र, राक्षस, गन्धर्व, नाम के तीन प्रहर व्यतीत हो गये तब चौथे मनोहर नाम के प्रहर में सोलह स्वप्न देखे तदनन्तर मुख में प्रवेश करता एक हाथी देखा। प्रातः:काल महरानी राजा सिद्धार्थ के पास गई स्वप्नों का फल पूछा तब महाराज ने बताया कि तुम्हारे तीर्थंकर पुत्र उत्पन्न होगा। तदनन्तर देवों ने गर्भ कल्याणक मनाया देवियों को माता की सेवा हेतु नियुक्ति कर देवगण वापिस चले गये। तदनन्तर –

जन्म कल्याणक विधि - नौ माह पूर्व पश्चात्चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन आर्यमा नाम के शुभ योग में पुत्र उत्पन्न हुआ। यह पुत्र कर्म रूपी शत्रु को नष्ट करने वाला धर्म तीर्थ की स्थापना करने वाला होगा। सौधर्म इन्द्रादि देवों ने आकर बालक का सुमेरु पर्वत पर अभिषेक किया "वर्धमान" एवं वीर दो नाम रखे और बालक को पुनः लाकर माता को सौंप दिया और देव यथास्थान चले गये।

अन्तर काल - पार्श्वनाथ तीर्थंकर के दो सौ पचास (250) वर्ष व्यतीत बाद भगवान महावीर हुये उनकी आयु भी इसी में शामिल थी। आयु 72 वर्ष अवगाहना 7 हाथ।

एक बार 'संजय' और 'विजय' नाम के दो चारण मुनियों को किसी पदार्थ में शंका थी भगवान के जन्म के बाद ही उनके समीप आये और दर्शन मात्र से ही उनका संदेह दूर हो गया इससे बड़े भक्ति भाव से सन्मति तीर्थंकर होने वाला है अर्थात् 'सन्मति" नाम रखा।

एक दिन स्वर्ग के इन्द्रों में चर्चा हो रही थी कि इस समय वर्द्धमान से बढ़कर कोई बलवान नहीं है तब संगम नाम का देव परीक्षा लेने के लिये आया उस समय वर्द्धमान अनेकों बालकों के साथ वृक्ष पर चढ़े थे उस देव ने विशाल सर्प का रूप बनाया और उस वृक्ष की जड़ से लेकर स्कंध तक लिपट गया। सब बालक उसे देख कर भय से काँप उठे और शीघ्र ही डालियों पर से कूद कर नीचे आ गये और भाग गये। क्योंकि महाभय होने पर कोई नहीं ठहरता। वह सर्प जो १00 जिह्वाओं से युक्त था ऐसे सर्प पर चढ़कर उन वर्द्धमान ने ऐसी क्रीड़ा की जैसे पलंग पर ही क्रीड़ा कर रहे हो - कुमार की क्रीड़ा को देख संगम देव प्रसन्न हुआ और उनका नाम महावीर रखा स्तुति की।

इस प्रकार 30 वर्ष तक महावीर का कुमार काल बीता। तदनन्तर उन्हें मतिज्ञानावरण के क्षयोपशम से उन्हें आत्मज्ञान हो गया और पूर्वभव का स्मरण हो उठा। उसी समय स्तुति पढ़ते हुये लौकान्तिक देवों ने उनकी स्तुति की। समस्त देवों ने आकर उनके निष्क्रमण कल्याण की क्रिया की। उन्होंने अपने मधुर वचनों से बन्धुजनों को प्रसन्न कर विदा किया। तदनन्तर वे "चन्द्रप्रभा नाम की पालकी पर आरूढ़ हो 'पाण्डवन' में उतरे और "उत्तर' की ओर मुँह करके तेला का नियम लेकर रत्नमयी बड़ी शिला पर बैठे।

वात्सल्य मूर्ति डॉ. अरुणा जैन का निधन

जाने माने उद्योगपति और समाजसेवी स्व. डॉ. बाहुबली कुमार जैन की धर्मपत्नी, धर्म एवं समाज में अटूट श्रद्धा रखने वाली वात्सल्य मूर्ति डॉ. अरुणा जैन का उनके ललितपुर स्थित निवास स्थान पर णमोकार मंत्र की वाचना करते हुए ८८ वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका सम्पूर्ण जीवन सामाजिक और धार्मिक कार्यों में समर्पित रहा। बुंदेलखंड के तीर्थों और मंदिरों के विकास में उनके सहयोग और प्रेरणा से अनेक कार्य हुए और बाहुबली नगर, ललितपुर स्थित भव्य जैन मंदिर की स्थापना उनकी और स्व. डॉ. बाहुबली की परिकल्पना और अथक प्रयासों का ही परिणाम है, जहां प्रथम प्राण प्रतिष्ठा और पंचकल्याणक परम पूज्य आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज के आशीर्वाद से और उन्हीं के द्वारा संपन्न कराया गया था।

-स्वराज जैन

उपट्टा लगने से मिली थी अजितनाथ की प्राचीन प्रतिमा

-डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर

मध्यप्रदेश के सागर जिला मुख्यालय से 40 कि. मी. दूर राष्ट्रीय राजमार्ग 86 पर स्थित दलपतपुर से 13 कि.मी. की दूरी पर है नैनागिरि अतिशय-सिद्ध क्षेत्र। उस जमाने में लोग व्यापार के लिए घोड़ों पर सवार होकर या घोड़ों पर सामान लाद कर स्वयं उसकी लगाम पकड़कर पैदल चलते हुए जाते थे। बम्हौरी के महाजन श्यामले जी बम्हौरी से सागर पैदल या घोड़े पर व्यापार हेतु जाया करते थे। रास्ते में एक टेकरी पर इन्हें पैर में उपट्टा लगा, इन्होंने वहाँ देखा और कुछ खरोंचा तो पुरातात्त्विक महत्व की प्राचीन मूर्तियां मिलीं। और अधिक खनन व सफाई करवाने पर यहां एक ऐतिहासिक तीर्थ क्षेत्र ही मिला जिसका नाम है नैनागिरि-रेशंदीगिरि। उन्हीं पुरावशेषों में एक है तीर्थंकर अजितनाथ की प्रतिमा।

तीर्थंकर अजितनाथ प्रतिमा-

नैनागिरि में पर्वत पर उत्खनन में प्राप्त प्राचीन तीन प्रतिमाएँ अधिक खण्डित नहीं हैं। एक दृष्टि में तो ये सर्वांग दिखती हैं, और बहुत मनोहर हैं। एक पद्मासन तीर्थंकर ऋषभनाथ, दूसरी तीर्थंकर नेमिनाथ और तृतीय यह तीर्थंकर अजितनाथ की प्रतिमा है। सभी सपरिकर प्रतिमाएँ हैं। प्राचीन प्रतिमाओं को देखने से प्रतीत होता है कि वर्तमान समय की भांति परिकर रहित प्रतिमाओं का निर्माण ही नहीं होता था। सोलहवीं शताब्दी से पूर्व की प्रतिमाएँ सपरिकर ही प्राप्त होती हैं। संवत् पन्द्रह सौ में जीवराज पापड़ीवाल ने परिकर रहित हजारों प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवा कर बैलगाड़ियों में रखवाकर जगह-जगह के मंदिरों में स्थापित करवाई, तब से परिकर विहीन एकल प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा की परंपरा अधिक चल पड़ी।

नैनागिरि में नूतन सिद्धप्रतिमा मंदिर-हॉल में उक्त तीनों पुरातन प्रतिमाएँ सुन्दर एकल वेदियों पर स्थापित हैं। बीच की पद्मासन प्रतिमा के बायीं ओर और हम दर्शन करने खड़े होंगे तो हमारे दाहिने हाथ की ओर की खडगासन प्रतिमा तीर्थंकर आजितनाथ भगवान की है। 110 से.मी. अवगाहन और 33 से.मी. चौड़े लाल बलुआ पाषाण-फलक में उत्कीर्ण यह प्रतिमा सपरिकर है। इसके सिंहासन पर बीच में गज चिह्न और पार्श्व में दो-दो लघु जिन अंकित होने से यह पंचतीर्थी तीर्थंकर अजितनाथ की प्रतिमा निर्धारित होती है।

इसके सिंहासन में आगे को दो सिंह विरुद्धाभिमुख कलायुक्त उत्कीर्णित हैं। उनके बगल में कुछ पीछे को बायें तरफ महायज्ञ यक्ष, और दायें यक्षी-रोहणी है। जो कि प्रतिमा शास्त्र के अनकूल है। सिंहासन पर पाद-चौकी, उस पर एक छोटा कलात्मक पलासना जैसा लटका हुआ सिंहों के बीच में प्रदर्शित है। उस पर एक छोटा गज-चिह्न बना है। यह मुख्य प्रतिमा के अजितनाथ की होने का द्योतक है। मुख्य प्रतिमा जी के पार्शों में चॉमरधारी देव बने हैं। बायें तरफ के चॉमरधारी के दाहिने हाथ में और दाहिनी ओर के चॉमरधारी के बायें हाथ में चॅवर ढुराते हुए दर्शाया गया है। ये चॉमरधारी द्विभंगासन में कट्यावलम्बित-हस्त खड़े हैं। पूर्ण प्रतिमा-फलक में सर्वाधिक इन्हीं को अलंकृत किया गया है। शीश पर मुकुट किरीट, गलहार व दोहरा मुक्ताहार दर्शाया गया है। भुजाओं में भुजबंद, करों में कड़े, कटिमेखला, मेखला में अरुद्दाम व मुक्तदाम लम्बित हैं। अधोवस्त्रों के शल स्पष्ट प्रदर्शित हैं।

इन चॉमरधारी देवों के ऊपर के भाग में तीर्थंकर के दोनों पार्श्वों में चरण-चौकी पर एक-एक खडगासन हस्तावलम्बित दिगम्बर आकृतियां हैं जो तीर्थकरों की ही हैं। उनके भी ऊपर के स्थान में दोनों ओर एक-एक पद्मासन जिन चरण-चौकियों पर आसीन आमूर्तित हैं। इनका अंकन मुख्य प्रतिमा के स्कंधों तक है। इनसे ऊपर दोनों ओर गज-लक्ष्मी दो गज अर्धोत्थितासन में उत्कीर्णित हैं। इनके मोटी जंजीर की एक लड़ी पूंछ के नीचे से आकर पीठ-पेट को लपेट कर बंधी हुई सांकल में बांधे दर्शाया गया है। इन गजों की सूड़ नीचे को लटकी हुई है। बायें तरफ के गज पर पुरुष और दायें तरफ के गज पर स्त्री (जिसका केश-जूड़ा स्पष्ट देखा जा सकता है) एक एक कलश लिए अभिषेकातुर आरूढ़ प्रदर्शित हैं।

तीर्थंकर अजितनाथ की प्रतिमा बहुत सुन्दर कनकर्मत हुई है। भारत में अभी अर्वाचीन समय में जो खडगासन प्रतिमाएं विशेष तौर पर उत्तर भारत में बनावाई गई हैं उनके पाद और पादांगुलिकाएँ प्रतिमा की विशालता की अपेक्षा बहुत छोटे हैं।, इस प्रतिमा को उन सब दृष्टियों से देखें तो एक सामान्य व्यक्ति भी सहज कह सकता है कि इनके पाद प्रतिमा के सम्पूर्णांग के अनुपात में ही बने हैं। कायोत्सर्ग मुद्रा के हाथ लंबित हैं। पेट में त्रिवली स्वाभाविक है। नाभि गंभीर, विस्तीर्ण वक्षस्थल के मध्य अलंकृत श्रीवत्स चिह्न। ग्रीवा में भी

गांभीर्य लिए हुए त्रिवली का अंकन है। विस्तीर्ण कर्ण, कर्णों के सहारे दोनां ओर केश-लटें स्कंधों पर आयी हुई उत्कीर्णित हैं। सौम्य मुद्रा, नासाग्रदृष्टि है जो दिगम्बर प्रतिमा की मुख्य पहचान है। इस प्रतिमा के मस्तक पर कलायुक्त त्रिछत्र दर्शाया गया है।, छत्रत्रय के दोनों ओर उड्डीयमान मालाधारी युगल हैं। त्रिछत्र के ऊपर दुन्दुभि वादक स्पष्ट देखा जा सकता है। जो कि ढोलक पर थाप देता हुआ सुन्दरता युक्त अंकित है।

तीर्थंकर अजितनाथ की प्रतिमाओं का अंकन भी बहुत प्राचीन है। अशोक की लाट में बैल, हाथी, घोड़ा और सिंह का चिह्न है। राजगिर के सोनभण्डार में जो चतुर्मुखी सर्वतोभद्रिका प्रतिमा पायी गई है, उसकी चारों प्रतिमाओं में से एक पर गज चिह्न है। यह प्रतिमा बहुत प्राचीन है। नौवीं-दसवीं शताब्दी की तो गज चिह्न की अनेक प्रतिमाएं हैं। कई प्रतिमाओं पर सिंहासन के लिए भी सिंहों के स्थान पर दो हाथियों का अंकन किया गया है। किन्तु चिह्न के लिए मुख्य पहचान यह है कि जो विरुद्धाभिमुख अर्थात् एक-दूसरे की ओर पीठ किये हुए अंकित हैं तो वे पराक्रम सूचक सिंहासन के लिए उत्कीर्णित किये गये हैं, चाहे हाथी हों या सिंह। यदि अनुकूलाभिमुख अर्थात् एक-दूसरे को देखते हुए से शिल्पित हों तो वे तीर्थंकर प्रतिमा के चिह्न के सूचक हैं। और यदि दो की जगह एक ही है तो वह निरापद चिह्न ही है। किन्तु जब तीर्थंकर संयुक्त रूप में शिल्पित हों तब पूरे परिकर की परिस्थितियों का अवलोकन कर निर्णय लिया जा सकता है। इस प्रतिमा का समय नौवीं से ग्यारहवीं शताब्दी अनुमानित किया जा सकता है।

समाचार

शाश्वत निर्वाण भूमि सम्मेदशिखर बचाओ अभियान के अंतर्गत

अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन द्वारा शांति पूर्ण अहिंसक जागृति आंदोलन

अखिल भारतीय स्तर पर सम्मेदशिखर विधान

"एक बार बन्दे जो कोई, ताहि नरक पशु गति नहीं होई"

परम पूज्य **गणिनी प्रमुख भारतगौरव आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी** की पावन प्रेरणा से गठित अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन द्वारा दिनांक 12 जनवरी 2022 पौष सुदी दसमी, भगवान् शांतिनाथजी के केवलज्ञान कल्याणक दिवस पर संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सुमन जैन के आह्वान के प्रतिफल से इंदौर नगर की 8 ईकाइयों सहित खंडवा, नासिक, अरोला, दिल्ली, मंदसोर, रतलाम, उज्जैन, हस्तिनापुर, आगरा, मेरठ आदि स्थानों की महिला संगठन सदस्याओं ने सम्मेदशिखर विधान का आयोजन किया ।

इंदौर नगर में पं. रतनलालजी शास्त्री के मार्गदर्शन एवं ब्र. दीदियों के सानिध्य में सुप्रसिद्ध गायिका जयश्री टोंग्या द्वारा संगीतमय पूजन संपन्न कराई गयी । श्रीमती सुमन जैन की भावनानुसार एक सुन्दर सम्मेदशिखर की रचना मॉडल रूप में बनाई गई तथा ब्र.दीदियों द्वारा मण्डल विधान की सुन्दरतम रचना की गई। श्रीमती रेणु गोधा तथा कंचनबाग महिला संगठन की सदस्याओं ने भक्तिभाव पूर्वक अर्घ चढ़ाये । खण्डवा से सपना लुहड़िया, कालावी नगर इंदौर में उषा पाटनी, नेमीनगर में रेखा पतंग्या, सुदामानगर से उषा बंडी, तिलकनगर से मीना विनायका, पलासिया से इंद्रा अजमेरा आदि की उपस्थिति में संगठन सदस्याओं ने सम्मेदशिखर मण्डल विधान के अर्घ चढ़ाये तथा प्रार्थना की कि हमारे इस शाश्वत तीर्थ पर कोई आंच न आने पाए।

इस कार्यक्रम को ऋषभदेव ज़ूम चेनल द्वारा भी दिखाया गया तथा **चारित्रचंद्रिका ज्ञानमती माताजी** ने ज़ूम पर उपस्थित सभी इकाइयों

को आशीर्वाद प्रदान किया तथा सार्थक पहल करने हेतु राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सुमन जैन व सभी की प्रशंसा की। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने कहा कि भगवान शांतिनाथजी के ज्ञानकल्याणक दिवस पर किया गया यह विधान अवश्य ही सार्थकफल देगा ।

राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सुमन जैन ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा- सम्मेदशिखर हमारा है, हमारा था और हमारा ही रहेगा ।

तीर्थ जो महान है, जैनियों की शान है
शिखरजी जैनियों का सम्मान है
एक-एक पत्थर पूजनीय है जहाँ
करोड़ों तीर्थों के समान है ।
जैनियों के मान पर आंच जो आई अगर
विश्व को हिला के रख देंगे हम
शिखरजी पर उठाई अगर आँख जो किसी ने
सरकार भी गिरा के रख देंगे हम

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की महत्वपूर्ण कड़ी – श्रमण संस्कृति

- आचार्य राजकुमार जैन, इटारसी

अध्यात्म प्रधान श्रमण संस्कृति जिसे भारत की मूल संस्कृति कहा जाता है, भारत में प्राचीन काल से प्रवाहमान विभिन्न मूल संस्कृतियों में अन्यतम है । पुरातात्विक साक्ष्यों शिलालेखों उद्धरणों, भाषा वैज्ञानिक अन्वेषणों वैदिक वांड्मय तथा प्राचीन साहित्य के अध्ययन-अनुशीलन के आधार पर अनेक विद्वानों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि आर्यों के आगमन से पूर्व भारत में जो संस्कृति विद्यमान और प्रचलित थी उसका सीधा सम्बन्ध श्रमण या आर्हत संस्कृति से है । श्रमण संस्कृति अपनी जिन विशेषताओं के कारण गरिमा मंडित है उनमें श्रम, संयम, त्याग जैसे संस्कारों तथा आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। श्रमण संस्कृति में प्रारम्भ से ही मानवीयता, समानता, आत्मविकास, गुण, पूजा, कर्म फल, मुक्ति, परलोक आदि के विषय में गंभीर चिंतन और मनन किया गया है।

ऐसा माना जाता है कि भारतीय संस्कृति अनेक संस्कृतियों का मिश्रण है और उस भारतीय संस्कृति में श्रमण संस्कृति की नींव इतनी गहरी है कि उसके आद्यांश को खोज पाना संभव नहीं है । श्रमण संस्कृति यद्यपि आध्यात्मिक संस्कृति के रूप में जानी जाती है, तथापि अभ्युदय एवं निःश्रेयस दोनों ही उसके साध्य के आधार हैं जिसकी चरम परिणति मुक्ति या मोक्ष में है। अपने स्व-पर कल्याणकारी स्वरूप के कारण श्रमण संस्कृति को जो श्रेष्ठता एवं उत्कृष्टता प्राप्त है वह किसी अन्य संस्कृति को प्राप्त नहीं है। यह बात अलग है कि इस देश में कालांतर में जिन संस्कृतियों ने जन्म लिया उनमें सर्वाधिक रूप से विकसित संस्कृति मात्र श्रमण संस्कृति ही है जिसका स्वरूप हजारों वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद आज भी अक्षुण्ण है। उसका कारण संभवतः यह है कि इसमें व्यक्ति को प्रधानता दी गयी है और यही उसकी विशिष्टता है। क्योंकि व्यक्ति स्वकृत कर्मों के लिए स्वयं उत्तरदायी है, वह स्वयं अपने भाग्य का निर्माता और स्वकृत कर्मों के फल की भोगता है।

अप्पा कत्ता विकत्ता य सुहाण य दुहाण य ।" व्यक्ति प्रधानता के क्षेत्र की व्यापकता है व्यक्ति की स्वतंत्रता तक और यही व्यक्ति स्वातंत्र्य जो अहिंसा का द्योतक एक महत्वपूर्ण अंग है। व्यक्ति स्वातंत्र्य की रक्षा ही अहिंसा के मूल में निहित रही है। व्यक्ति स्वातंत्र्य का एक अन्य अर्थ है – व्यक्ति की समानता। वस्तुतः यदि देखा जाये तो प्रत्येक व्यक्ति की अपनी स्थिति, गौरव और महत्त्व है। अतः न कोई हीन है और न कोई विशिष्ट –"णो हीणो, णो अईरितो" व्यक्ति प्रधान होने के कारण श्रमण संस्कृति में विराग भाव का उद्यम और विकास हुआ। सामान्यतः लोगों के रागात्मक संबंधों के परिणाम स्वरूप परिवार और समाज का निर्माण होता है, जबकि उन संबंधों के विच्छेद की परिणति विराग या संन्यास को जन्म देती है। वह विराग ही श्रमण संस्कृति का मूल है।

आध्यात्मिक एवं आत्मवादी होने के कारण श्रमण संस्कृति ने भारतीय जन जीवन को अमूल्य देन दी है। निवृत्ति परक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तथा इस परिभ्रमण शील संसार से आत्मा की मुक्ति के लिए जितना जोर श्रमण संस्कृति में दिया है उतना किसी अन्य संस्कृति ने नहीं दिया। श्रमण के लिए आत्मा की मुक्ति मुख्य लक्ष्य है, अन्य कार्य गौण हैं। वस्तुतः यदि देखा जाये तो ये दोनों ही तत्व एक दूसरे के पूरक हैं। मोक्ष की प्राप्ति आत्मा को ही होती है। अतः आत्मा का मुख्य लक्ष्य है – मोक्ष की प्राप्ति। अतः आत्मा की प्रवृत्ति मोक्षाभिमुख करने के लिए साधुजन सतत प्रयत्नशील रहते हैं। तदर्थ द्विविध कार्यों की अपेक्षा रहती है :- समस्त कर्मों का संपूर्णतः विनाश या क्षय करके आत्मशुद्धि पूर्वक मोक्ष प्राप्ति। ये दोनों ही श्रेणियां क्रमशः निवृत्ति एवं प्रवृत्ति मूलक है। दोनों का उद्देश्य एक ही है – निष्कर्म बन जाना। भेद है केवल अनुष्ठान का या प्रक्रिया में। प्रथम अनुष्ठान है कर्म का पूर्णतः परित्याग और द्वितीय अनुष्ठान है कर्म शोधन पूर्वक उसका क्षय।

श्रमण संस्कृति जो भारत की मूल संस्कृति से सम्बंधित है उसे अब से कुछ दशकों पूर्व तक किसी अन्य धर्म या संस्कृति की एक शाखा मात्र बतलाकर उसकी उपेक्षा की जाती रही है। जब से सिन्धु घाटी, मोहन जोदड़ो एवं हड़प्पा से प्राप्त प्राग्वैदिक सभ्यता के साक्ष्य प्राप्त हुए, साथ ही वैदिक साहित्य के परिशीलन से उसमें उपलब्ध आर्येत्तर परम्पराओं की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ तब से पाश्चात्य एवं सत्यान्वेषी भारतीय मनीषियों ने श्रमण संस्कृति के स्वतन्त्र अस्तित्व तथा उसकी प्राचीन गौरवपूर्ण परम्परा को एक स्वर से स्वीकृत किया। विशाल वैदिक साहित्य में उल्लिखित व्रात्य, अर्हत, यति, हिरण्यगर्भ, वातरसना-मुनि, केशी, शिशनदेव, पणि आदि तथा इसी तरह के अन्य शब्द एवं अनेक तीर्थंकरों के नाम और उनके प्रति आदरपूर्ण शब्दों में रचित सूक्त एवं ऋचाएं स्पष्ट ही श्रमण संस्कृति के उत्कर्ष का द्योतन करती हैं।

आर्य एवं द्रविड़ सभ्यता एवं संस्कृति के सम्बन्ध में इतिहासकारों एवं विशेषज्ञों का मत है कि जब वैदिक आर्य पश्चिमोत्तर सीमा से भारत में प्रविष्ट हुए, उन्हें यहाँ जिन लोगों से पाला पड़ा वे शिशनदेव, व्रात्य और वात रसना मुनियों की उपासना करते थे। उनकी सभ्यता अत्यंत समुन्नत और विकसित थी। इतिहासकारों ने उसे द्रविड़ सभ्यता का नाम दिया। इस सभ्यता के दर्शन हमें सिन्धु-घाटी के मोहन-जोदड़ो और हड़प्पा में मिलते हैं। इस सभ्यता को नागर-सभ्यता भी कहा जाता है । नागर सभ्यता से नगर नियोजन की उप विकसित परम्परा का आशय लिया जाता है जो इन नगरों में उत्खनन के परिणाम स्वरूप हमें देखने को मिलती है।

भारत के मूल निवासी जिनमें द्रविड़ मुख्य थे, आर्यों की अपेक्षा कहीं अधिक सभ्य, सुशिक्षित और उन्नत थे। ज्ञान, ध्यान एवं योगतप आदि तत्व उनके जीवन में सम्मिलित थे। वे चतुर कृषक एवं पटु कलाकार थे। जीव एवं जगत के विषय में अनेक मौलिक दार्शनिक चिंतन रखते थे। उनका आर्यों पर प्रभाव पड़ा। भाषा, कला, स्थापित, नगर संयोजना और अन्य क्षेत्रों में भी उनका ज्ञान अधिक विकसित था। आर्यों ने द्रविड़ों को हरा कर दक्षिण में खदेड़ दिया और उत्तर भारत में अपना राज्य स्थापित करके अपने को उच्च और विकसित घोषित कर दिया। भारत के मूल निवासियों के मुकाबले में उन्होंने अपने को अच्छा मान लिया। हालंकि मूल भारतीयों की नागरिक सभ्यता आर्यों की सभ्यता की तुलना में कहीं अधिक बढ़ी-चढ़ी और उन्नत थी। यह

तथ्य अब सिन्धु घाटी सभ्यता के मोहन जोदड़ो और हड़प्पा में प्राप्त अवशेषों से पूर्णतया स्थापित हो चुका है।

आर्य सभ्यता का प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद ईसा पूर्व बारह सौ वर्ष के आस-पास की रचना माना जाता है जबकि सिन्धु सभ्यता कम से कम पच्चीस सौ वर्ष ईसा पूर्व की तो प्रमाणित हो ही चुकी है।

आर्यों ने भारत के मूल निवासियों को हराकर उनके नगरों को ध्वस्त कर दिया। उन्हें असुर, असभ्य, काला, नीच, दास, दानव और राक्षस तक कहना शुरू कर दिया। जब धीरे-धीरे आर्यों का राज्य कुछ प्रदेशों में स्थिर हुआ और वे मूल निवासियों के साथ घुल मिल गये तो दोनों संस्कृतियों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हुआ और इस प्रकार सांस्कृतिक आदान-प्रदान का क्रम प्रारम्भ हुआ। वस्तुतः जब भी दो संस्कृतियाँ लम्बी अवधि तक एक दुसरे के संपर्क में रहती हैं तो उनके प्रभाव परस्पर ग्रहण करने की स्वाभाविक प्रक्रिया भी शुरू हो ही जाती है। अतः यहाँ के मूल निवासी भी आर्यों के रहन-सहन और व्यवहार आदि के तौर-तरीके ग्रहण करने लगे। आर्य लोग केवल यज्ञशालाओं में ही आपस में मिल बैठते थे जबकि भारतीयों के मिलन-स्थल नदियों के किनारे हुआ करते थे। धीरे-धीरे यज्ञ और तीर्थ दोनों मिल गये। यज्ञों के स्थान पर द्रविड़ों के प्रभाव से मूर्ती पूजा ग्रहण की गयी। द्रविड़ देवता आर्यों के देवताओं में सम्मिलित हो गये। उनके गुण एवं स्वभाव तथा नाम भी आर्य बना दिए गये। इस प्रकार के संगम से एक संयुक्त संस्कृति का शुभारम्भ हुआ। वैदिक आर्यों का धर्म प्रकृति के तत्वों की पूजा और पेशा-पशुपालन था, वे अच्छे धनुर्धारी थे। वे महत्वाकांक्षी भी थे और उसी भावना से उत्प्रेरित होकर उन्होंने भारत की ओर प्रयाण किया था। उनका प्रथम संघर्ष सीमा प्रान्त में हुआ। वहाँ उन्होंने विजितों को दास बनाया और उनके मुखिया का नाम सुदास रखा, जिसका वर्णन ऋग्वेद में है। इनका प्रथम उपनिवेश आज का पश्चिमी पाकिस्तान था। वहाँ वे बड़े-बड़े यज्ञ करते, सोम पीते, गाते तथा आनंद से जीवन व्यतीत करते थे।

ऋग्वेद के अध्येता इस ज्ञान को जानते हैं कि इस समय तक वैदिक आर्यों का अधिकार सिन्धु देश तक ही था। उनकी संस्कृति उच्च वर्ग के लिए पृथक और दासों के लिए पृथक थी। संभवतः जाति व्यवस्थाओं का जन्म यहीं हुआ है और कालपुरुष की कल्पना कर ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की उसके सर छाती, उरु और पैरों में स्थापना कर जाति को अपरिवर्तन बना दिया।

मूल भारतीय संस्कृति में मानवीय समानता, आत्मविकास, गुणपूजा, परलोक, कर्मफल आदि पर अधिक जोर दिया जाता था जो सर्वथा स्वाभाविक था। जैनधर्म के बीसवें तीर्थंकर मुनि-सुव्रत के काल में भी इस संस्कृति के मानने वालों को "व्रात्य" कहा गया। बाद में उनको "व्रषण" कहा गया। उन्हें अयज्वन, क्रव्याद आदि भी कहा जाता था, किन्तु जब वे उनकी तपस्या, आचार-विचार, अहिंसा, सत्य आदि से अधिक प्रभावित हुए तब उन्होंने उनका नाम श्रमण रखा। "श्रमण" शब्द का सर्व प्रथम उल्लेख हमें "मांडुक्योपनिषत" में मिलता है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राग्वैदिक काल में अनेक आर्योत्तर जातियां थीं जिनकी समृद्ध और सुसंस्कृत परम्पराएँ थीं। वे वातरसना, शिशनदेव, व्रात्य आदि को मानती थी जिनके विषय में वेदों में विशेष जानकारी प्राप्त होती है। फिर भी भारत की इन मूल प्राचीन परम्पराओं की उपेक्षा भी कुछ इतिहासकारों ने कम नहीं की। इसलिए प्रो. हापकिंस ने ठीक ही लिखा है कि भारत की धार्मिक क्रांति के अध्ययन में जो विद्वान अपना सारा ध्यान आर्य जाति की ओर ही लगा देते हैं और भारत के समस्त इतिहास में द्रविड़ों ने जो बड़ा भाग लिया है उसकी उपेक्षा कर देते हैं वे महत्त्व के तथ्यों तक पहुँचने से रह जाते हैं।

शतपथ ब्राह्मण में ही तप से विश्व की उतपत्ति बतलाई गई है। प्रतिदिन अग्नि होत्र करना एक प्रधान कर्म था। इसकी उत्पत्ति की कथा इस प्रकार बतलाई गयी है –

"प्रारम्भ में प्रजापति एकाकी था। उसकी अनेक होने की इच्छा हुई। उसने तपस्या की। उसके मुख से अग्नि उत्पन्न हुई। चूंकि सब देवताओं में अग्नि प्रथम उत्पन्न हुई इसी से उसे अग्नि कहते हैं। उसका यथार्थ नाम अग्नि है। मुख से उत्पन्न होने के कारण अग्नि का भक्षक होना स्वाभाविक था। किन्तु उस समय पृथ्वी पर कुछ भी नहीं था। अतः प्रजापति को चिंता हुई। तब उसने अपनी वाणी की आहुति देकर अपनी रक्षा की। जब वह मरा तो उसे अग्नि पर रखा गया। किन्तु अग्नि ने उसके शरीर को ही जलाया, अतः प्रत्येक व्यक्ति को अग्नि होत्र करना चाहिए। यदि नया जीवन प्राप्त करना चाहते हैं तो अग्नि होत्र करो।

ऋग्वेद का पहला मन्त्र है – "अग्निभीडे पुरोहितम्। यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नपातमस।" अग्नि देवों के पुरोहित हैं। पुरोहित का अर्थ है "आगे रखा हुआ"। अग्नि में आहुति देकर ही देवों को तुष्ट किया जा सकता है।

ब्राह्मण ग्रंथों के काल में यज्ञों का प्राधान्य रहा। उनके पश्चात आरण्यकों का समय आता है। देवता विशेष के उद्देश्य से द्रव्य का त्याग ही यज्ञ है –यह आरण्यकों को मान्य नहीं है। ब्राह्मण ग्रंथों का सर्वोच्च लक्ष्य स्वर्ग था और उसकी प्राप्ति का मार्ग था यज्ञ। किन्तु अरण्यकों में यह बात नहीं है। तैत्तिरीय आरण्यक में ही प्रथम बार "श्रमण" शब्द "तपस्वी" के अर्थ में आया है।

ऋग्वेद के संकलयिता ऋषि अरण्यवासी ऋषियों से भिन्न थे। वे अरण्य में नहीं रहते थे। वैदिक साहित्य में "अरण्य" शब्द के जो अर्थ पाए जाते हैं उनसे इस पर प्रकाश पड़ता है। ऋग्वेद में गाँव के बाहर की बिना जुती जमीन के अर्थ में अरण्य शब्द का प्रयोग हुआ है। शतपथ ब्राहमण 5-3-35 में लिखा है "अरण्य में चोर बसते हैं। बृहदारण्यक 5-11 में लिखा है कि मुर्दे को अरण्य में ले जाते हैं, किन्तु छान्दोग्य उपनिषद 8/5/3 में लिखा है कि अरण्य में तपस्वी जन निवास करते हैं।

विद्वानों का मत है जब वैदिक आर्य पूरब की ओर बढ़े तो यज्ञ पीछे रह गए और यज्ञ का स्थान तप ने ले लिया। किन्तु तप जो स्वीकार करने पर भी आर्य देवताओं के पुरोहित अग्नि को नहीं छोड़ सके। अतः पंचाग्नि तप प्रवर्तित हुआ। भगवान पार्श्वनाथ को गंगा के तट पर पंचाग्नि तप तपने वाले ऐसे ही तपस्वी मिले थे।

चार आश्रमों की व्यवस्था भी चिन्त्य है। ब्राह्मण को ब्रह्मचारी और

गृहस्थ के रूप में जीवन बिताने के बाद सन्यासी हो जाना चाहिए –यह नियम वैदिक साहित्य में नहीं मिलता। पौराणिक परम्परा के अनुसार राज्य त्यागकर वन में चले जाने की प्रथा क्षत्रियों में प्रचलित थी।

कविकुल गुरु कालिदास ने रघुवंश में रघुओं का वर्णन करते हुए कहा है –

शैशवेभ्यस्तविधानां यौवने विषयेषिणाम।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम ॥

अर्थात शैशवकाल में विद्याभ्यास करते हैं, यौवन में विषय भोग भोगते हैं, वृद्धावस्था में मुनिवृत्ति अर्थात वानप्रस्थाश्रम में रहते हैं और अंत में योग के द्वारा शरीर त्याग करते हैं।

गौतम धर्मसूत्र (8/8) में एक प्राचीन आचार्य का मत दिया है कि वेदों को तो एक गृहस्थाश्रम ही मान्य है। अथर्ववेद और ब्राह्मण ग्रंथों में ब्रह्मचर्याश्रम का विशेषतः उपनयन का विधान है। किन्तु चार आश्रमों का उल्लेख छान्दोग्य उपनिषद में है। बाल्मीकि रामायण में किसी सन्यासी के दर्शन नहीं होते, सर्वत्र वानप्रस्थ मिलते हैं।

लोकमान्य तिलक ने अपने गीता रहस्य में लिखा है - वेद संहिता और ब्राह्मणों में संन्यास को आवश्यक नहीं। उल्टे जैमिनी ने वेदों का यही स्पष्ट मत बतलाया है कि गृहस्थाश्रम में रहने से ही मोक्ष मिलता है। दृष्टव्य है वेदांतसूत्र 2,4,17,20 और उनका यह कथन कुछ निराधार भी नहीं है। क्योंकि कर्मकाण्ड के इस प्राचीन मार्ग को गौण मानने का प्रारम्भ उपनिषदों में ही पहले देखा जाता है। उपनिषदकाल में ही यह अमल में आने लगा कि मोक्ष पाने के लिए ज्ञान के पश्चात् वैराग्य से कर्म सन्यास करना चाहिए। "इत्यादि

किन्तु प्राचीन उपनिषदों में वही पुरानी ध्वनि मिलती है शतपथ ब्राह्मण 13, 4-1 में लिखा है "एतद वे जरामर्धसत्रं यद् अग्निहोत्रं" अर्थात जब तक जियो अग्निहोत्र करो।

ईशावाश्यो उपनिषद में कहा है - कुर्वन्नेवैह कर्माणि जिजीवेषेत शतं समाः। "अर्थात एक मनुष्य को अपने जीवन भर कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। बोधायन और आपस्तम्ब सूत्रों में भी गृहस्थाश्रम को ही मुख्य कहा है। स्मृतियों की भी कुछ ऐसी स्थिति है। मनस्मृति में सन्यास आश्रम का कथन करके भी अन्य आश्रमोंकी अपेक्षा गृहस्थाश्रम को ही श्रेष्ठ कहा है।

इसके विपरीत जैन धर्म के अनुसार श्रमण धर्म को अपनाये बिना मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं है। गृहस्थ धर्म मुनिधर्म का लघु रूप है और जो मुनिधर्म का पालन करने में असमर्थ होता है वह गृहस्थधर्म का पालन करता है।

आचार्य कल्प आशाधर ने कहा है –

त्याज्यानसजस्त्र् विषयान पश्यतोपि जिनाज्ञया
मोहत्त्यक्यतुम्शक्तस्य गृहिधर्मोनुमन्यते ॥

जो जिनदेव के उपदेशानुसार संसार के विषयों को त्याज्य जानते हुए भी मोहवश छोड़ने में असमर्थ है उसे गृहस्थ धर्म का पालन करने की अनुमति दी जाती है।

जैन धर्म के पांच व्रत प्रसिद्ध हैं – अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इनका सर्व-देश पालन श्रमण करते हैं और एक देश गृहस्थ पालता है। अतः श्रमणों के व्रतों को महाव्रत और गृहस्थों के व्रतों को अणुव्रत कहते हैं। भगवान ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यंत चौबीस तीर्थंकरों ने संभवतः अनादिकाल से चली आ रही है। उसकी ऐतिहासिक एवं प्राचीनता विद्यमान साक्ष्यों और प्रमाणों से सुस्पष्ट है।

समाचार

केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी सांसद कोडरमा झारखंड ने की अंतर्मना गुरुदेव के अखंड मौन व्रत साधना की अनुमोदना

सिंहनिष्क्रीड़ित व्रत की अखंड मौनव्रत साधना मे लीन साधना महोदधी अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर महाराज संघ बीसपंथी कोठी मधुबन शिखर ज़ी में विराजमान हैं। यहाँ केंद्रीय मंत्री, स्थानीय विधायक व अन्य नेताओं ने अंतर्मना साधना धाम पहुंच कर अंतर्मना संघ के दर्शन कर सौम्यमूर्ति मुनिश्री पियूष सागर ज़ी से आशीर्वाद प्राप्त किया।

साधना मे लीन अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर ज़ी महाराज ज़ी का जीवन वृत्तांत, सृजन साहित्य व स्मृति चिन्ह प्राप्त कर, उनके व्रतों उपवास की अनुमोदना करते हुये महापारणा की जानकारी प्राप्त की। अंतर्मना संघ की और से उपस्थित सभी महानुभावो कों स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया गया।

इस अवसर पर साधना महोदधी अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर महाराज ने लिखित में कहा कि "ख्वाब तो परिंदों के होते हैं, आसमानों को छू जाने के इंसान की नसल तो बस, गिरने-गिराने और लोगों को बनाने में लगी है। एक व्यक्ति जिंदगी से निराश हो गया, उदास हो गया। उसने सोचा कि ऐसी मनहूस और बोर जिंदगी से तो मर जाना ही बेहतर है। अपने इस विचार को अंजाम देने के लिए एक दुकान पर गया और जहर खरीद लाया। जहर को भोजन में मिलाया और भोजन करके सो गया। जब सुबह हुई तो वह अंगड़ाई लेकर खड़ा हो उठा। वह उस जहर को खाने के बाद भी नहीं मरा, क्योंकि जहर में मिलावट थी। वह जहर नकली था। उसे भी ताज्जुब हुआ। उसने सोचा लगता है, अभी भगवान को मेरी मृत्यु स्वीकार नहीं है। दूसरे दिन उसने जीवित बचने की खुशी में कुछ पेड़े खरीदे और खा कर सो गया। और फिर ऐसा सोया कि अभी तक उठ नहीं पाया। कारण पेड़ों में मिलावट थी, उनमें जहर मिला था। आज जीवन के हर क्षेत्र में यह दुर्घटना घट रही है। भ्रष्टाचार, ब्लैक मार्केटिंग, बेईमानी, जनजीवन में इस तरह घुल मिल गए हैं कि इनसे बच पाना असंभव सा हो गया है। पूरे कुए में भांग घुली है। मिलावट का यह काम खाद्य और औषधियों में ही नहीं बल्कि विचारों और आदर्शों में भी बदस्तूर जारी है...!!!

Jainism in Pandya Country

Dr.C.Santhalingam

Thiruvathavur

This village lies at about 25 km away to Madurai in Melur taluk. This place can be reached by frequent city buses form Madurai and Melur. This historic village is ancient one, because this was the birth place of Kabilar, the Sangam age Tamil poet and birth place of Manickavasaka, the Pandyan minister turned Saivaite hyminist who lived in 9-10 Century CE. At the one end of this village on the Sivaganga road, one hillock lies in the name Ovamali. On this hill, very near to the land surface one natural cavern is seen with two Tamil-Brahmi inscriptions. These records were discovered and deciphered by Iravatham Mahadevan during 1966 and they are assigned to 200 BCE.

The first record is engraved below the dripledge in single line which reads,

'Pankada Arithan Kottupithon'

Thiruvathavur Tamil Brahmi Inscription

It means, this rock bed was caused to be cut by one Arithan, a resident of Pankadu (Village name). In between the first letter pa and second letter n., there is a long gap in which one letter 'na' can be inserted. If it is admitted, then the name of the village might be 'Panakadu", At present at about 15km distance from Thiruvadavur, one village is located with the name 'Panankadi; so, this same village might have been in vogue on those days and one of its resident Arithan had caused to be cut this rock beds at Ovamalai.

The second record reads as,

'upasan parasu urari kotupithon'

It is engraved above the dripledge. The upasan means a guru or teacher. So a teacher in the name Parasu has been caused to be cut these beds. This monument is declared as a historical place and maintained by the Department of Archaeology government of Tamilnadu.

Kilavalayu: Along Madurai to Thiruppathur main road at about 38KM distance lies this village. On the western side of this village

there is a hillock which is named as Panchapandavar malai by the locals. Wherever there are Jain caves and rock beds found the local people will name them as pancha pandavarmalai (ic) the residence of five heroes of Mahabaratha epic. The rock beds scooped at this hill are very neat and smoother than any other beds around Madurai. The plinth of the floor has canals neatly cut so as to drain the natural spring water oozing out from the cave. The cave is very spacious and more than fifty rock beds are also scooped out in this cave.

On the face of the bolder, dripledge is also cut to drain the rain water out of the cave. Below the dripledge one Tamil Brahmi inscription is engraved. This record is somewhat peculiar, because the letters are cut upside down and right to left. The single line record reads as,

'Upasan Thondilavon Kodu Paliy'. The term upasa is considered by Iravathan Mahadevan a corrupt form of upajjaya, a pali language word which means a religious exponent (preacher). These people might have been the preists who conduct prayers at the houses of Sravagas (Jain house holds).

The place name 'Thondi' may be identified with one, a Sangam age port in east coast. Ilaiyan, the resident of Thondi had been caused to be cut the beds at this hill. This record is assignable to 1Century CE.

At the top of the inscription on the rock two rock figures of Jaina Thirthankaras are cut in sitting posture. Below them one Vatteluthu inscription is engraved which reveals that these figures are made by one Sankaran Srivallabhan, He also donated certain measure of rice for food offering and 50 sheep for burning a perpetual lamp.

On the western side of the cave, at the face of an another bolder six stone figures of Thirthankaras are cut. Three are Mahaviras and others are Parsvanatha figures and they are also painted with various colour pigments just ike at Anaimalai and Arittapatti figures. These images are assignable to 9-10 Century CE, Above the dripledge of the cave and on the plinth surface of the cave some holes are made on the rock surface. These holes might have been used to insert the poles so as to make a temporary thatched shed for the devotees or students of the ascetics.

Since Sangam age and upto 9-10 Century CE this place might have served as an important jain center. It is located on the ancient high way between Pandya country to Chola country. Now this hill is declared as a protected monument by the Archaeological survey of

India, Govt of India. Number of stone quarries were functioning very near to this monument but fortunately this hill is protected by the efforts of art lovers and local people.

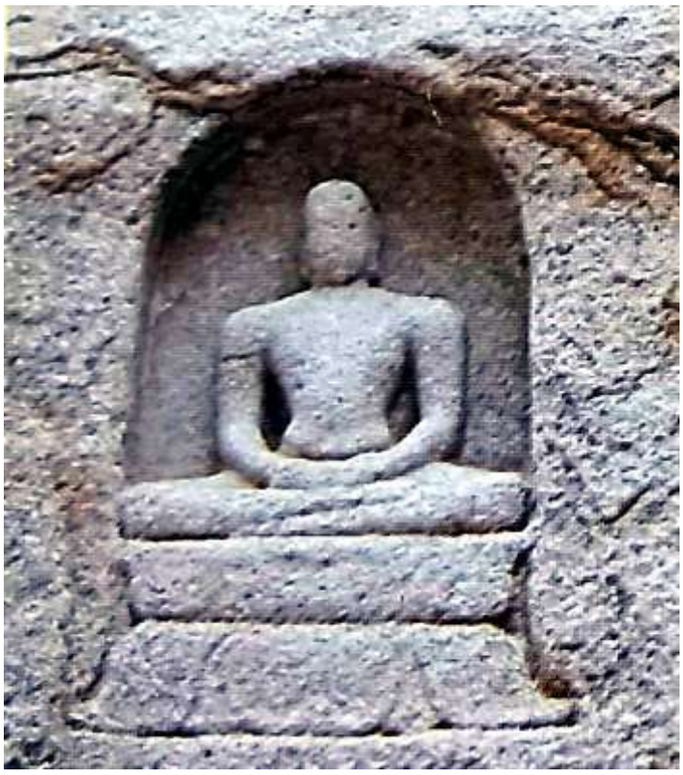

Karungalakkudi : On the highway of Madurai to Trichi at about 40 KM distance this village is located. It is well connected by buses form Melur and Madurai. On the northern side of this village one hillock is located with the name Panchapandavar Kuttu. In this hill one natural cavern is seen which is neatly hewn with 30 rock beds. The cave has been cut with a dripledge and below it one line Tamil Brahmi inscription is engraved. It reads as, 'Elaiyur Arthinpaliy'

Itis assigned to 2Century BCE andit means 'Arithin' an individual a resident of Elaiyur has caused to be cut these rock beds. According to Iravatham Mahadevan, Elaiyur may be the corrupted form of Idaiyur, the residential area of Cattle keepers.

On the plinth surface of the cave, one stone pit is cut in oval shape, which may be considered as a grinding place of medicines etc. Such types of oval shaped pits are already found at Anaimalai Jain centre and Thirupparankunram cave. Usually the aina monks, served the people mainly in four ways. They provided food, education, shelter and medicine for the needy. So, this oval shaped pit might have been used for preparing medicines by grinding natural herbs.

On the opposite rock face at this place one figure of a Jaina ascetic is executed. This figure is in sitting posture with fully tonsured head. No triple umbrell, is seen and so it may not be a Thirthangara, but an ascetic.

Below this figure one small inscription is written in Valleluthu script which reads as, 'Sri Accananthi Ceyviththa Thirumeni' (ic) This figure was made by the saint Accananthi. This figure according to the inscription can be dated to 9-10 Century CE.

Above this cave, on the terrace of the rock some figures of Pre-historic paintings are seen, mostly they are drawn in white colour. So, it is assumed before the advent of Janis, at this hill number of ancient tribal people might have occupied this cave and its surrounding. Jain monks might have approached them and converted them into their faith. Now this Jain cave is declared as a historical monument and protected by the department of Archacology government of Tamilnadu.

Varicciyur (Kunnathur)

On the Madurai-Sivagangai main road at 15 KM distance lies the village Varicciyur, which is included in Madurai north Taluk and Madurai district. One road branches out from this village to connect Thiruppuvanam via Kunnaththur. On this road lies a small hillrock in the name Uthayagiri and also called Subramaniyar hill. At this hill, one north facing natural cavern is seen where in number of rock beds were hewn for the stay of Jaina monks. One dripledge is cut on the face of the rock to drain out the rain water. Above and below the dripledge totally three Tamil-Brahmi inscriptions are engraved here all are datable to 2 Century BCE. The first record engraved on the forehead of the rock above the dripledge reads as,

Paliy Kodupi.....

This record is incomplete, only two words can be seen. The donor of the rock beds might have been mentioned al the end which is lost.

The second record is engraved on the east facing rock surface, above the dnipledge which reads as, 'Ata….rai itha vaika on nuru kala nel...' This inscription is also damaged here and there and so full meaning couldnot be known. The donation of one hundred kalam measure of paddy might have been recorded here. The third record is engraved with same place but below the dripledge, which reads,

'Hanathan Karuiya nal mazhau hai'

It means this good cave has been caused to be cut by one Ilanathan. All these three records belong to 2Century BCE. Kalam, Nel, Nuru, Muzhakhai are the words that attract our attention in these records. For the first time these words occur in such an early period. Kalam denotes a measure, Paddy a grain, Nuru (hundred) one numeral, Muzhahaia cave. All other inscriptions around Madurai mention only about the donations of rock beds. But one of these inscriptions

furnish some different donations. This hill is declared as a protected monument and maintained by department of Archaeology government of Tamilnadu. This place is well connected by city buses from Madurai.

Anaimalai Mahavira - 10th CE

Anaimalai - People who are entering Madurai city from northern or eastern districts of Tamilnadu cannot avoid to see one big hillock which lies as an elephant with a elongated trunk in the front and a long tail at the back. Since it looks like a sleeping elephant the local people call this hill as Yanaimalai (Elephant Hill). At a 8 Km distance east of Madurai city this hill is located near a village in the name Oththaikadai (one shop). The 9-10CE records of this hill mentions the name of one village as Narasinga mangalam where this hill exactly lies. Now this village is named as Narasingam. This name is in vogue because of a rock cut cave temple executed where in one seated Yoha Narashima bas-relief sculpture at the garbhagraha.

This hill has been served as an important Jain abode since sangam age which is attested by the presence of a Tamil-Brahmi record datable to 1Century CE. It is considered as one among the important eight Jain hills located around Madurai.

Thirugnanasampantha the first among the Devaram trio, mentions this Place jn one of his hymns as a stronghold of Jainism. On the top

Anaimalai Jainsculptures - 10th CE

terrace of this hill, one Natural cavern is seen where in rock beds are strewn smoothly for jain monks. About 20 beds are scooped out in this Cave. The face of this cave is cut with dripledge below which one Tamil-Brahmi inscription is engraved in two lines. It reads as,

'Iva Kunrathu uraiyul pathanthan Eri Arithan Athuvayi Aratta Kayipan' It means this cave and rock beds are made for Eri Arithan and Arattakayipan the two monks. The first word Ivakunram means elephant hill (Ivam-Elephant). The term uraiyul means the residencial place (Cave). The word Pathanthan means a respectable person, honourable man — reverencial man). The word Athuvayi is the corrupted form of Attavayi which means exponent or preacher. Arrattan denotes the name of the monk and Kayipan denotes his Kasyaba gotra.

One important aspect regarding the arthography of this record is to be mentioned here. In this record in the word 'Aratta Kayiban the first 't' has a dot (pulli) on the top. It means it is to be taken as a doted consonant.

No such Tamil-Brahmi inscriptions have dots either on consonants or in short vowels except this one letter, It is to be discussed at length. Tholkappiyam, the earliest Tamil grammar, the exact author and date of it is not known. It mentions in one of its verse,

'Meyyin lyarkkai pulliyodu Nilaiyal'

That means all Consonants should beara dot on its head, The next verse denotes,

'Ekara okoraththu iyarkkaiyum arre',

Which means the vowels e and o also should bear dots, Various Tamil scholars define the date of Tholkappiyam from 14CBCE-5CBCE. But the Linguists differ from their opinion and fix the date after Christ according to the dot found with Anaimalai recod. But still itis a disputable question.

Apart form this Brahmi cave, on the north slope of the hill one galaxy of Jaina sculptures are carved which are datable to 9-10 CCE. On the face of the rock bolder these images are carved and below them inscriptions in vatteluthu scripts are also engraved which reveal the detail by whom these sculptures were made and protected. Among these sculptures, Mahavira, Parsvanatha-

Neminatha, Bahubali (Komatisvara) and Ambika Yakshi are carved. Well ground lime paste is applied above these sculptures and different colours are painted in wet condition. Mostly red, yellow, green colour pigments are used in these paintings. Only some of them have still retained their colours whereas most of them have disappeared.

These paintings are comparable to that of Arittapatti and Sittannavasal paintings all are datable to 9CCE. Fly wiks, lamps and foliages have still maintained their colours. These are standing as good examples for the early Pandyan painting art and also prove that Jains were not against fine arts.

The sculptures represented here depict the puranic episodes of Jaina religion. Mahavira is simply shown as sitting in arthapariyanka asana, with triple umbrella above his head. The story of Parsvanatha, the 23" Thirthankara is sculptured excquisitely as a drama form. At first Parsvanatha is shown as standing straight (Kayothsarga) and by his leftside one demon Kamatha is shownas trying to pelt a big rock bolder on him. Dharnendra, the yaksha of Parsvanatha spreads his canopy a five hooded snake above the head of Parsvanatha to save him from the attack of Kamatha. Padmavathy, the Yakshi as well as the wife of Dharnendra tries to save her husband by holding a Vajra umbrella above the head of Dharnendra. The demon Kamatha, who failed in his attempt finally surrenders to Parsvanatha and bowed down at his feet and put his head at the feet of Parsvanatha. This whole scene is depicted in a single panel very neatly

Next, Bahubali figure is sculptured with his two sisters and finally Ambika Yakshi figure is neatly executed. Below these sculptures totally eight Vatteluthy inscriptions are engraved. Among them one record attracts our attention because it furnishes the name of Accananthi saint. He had caused to be cut one figure and it was protected by the Brahmin shaba of Narashinga mangalam (ie) the village that lies below the hillock. This record shows that, during this period (ie 9CCE), no dispute between Jainism and Saivism prevailed, but religious harmony was maintained.

During the 7" CCE some disputes between both these religions occurred by which Jainism faced some set back. 8000 jain ascetics who lived in the ancient eight jain aboades were tortured. But after one or two centuries this turmoil scenario was completely changed and both Saivism and Jainisms were equally patronized by the then Pandyakings. How this miracle was possible in such a short period? This was because of the matrimonial relationship between Pandyas and Gangas of Thalakad. Usually Gangas were staunch followers of Jainism. One Pandya king Parantaka Varagana I (768 — 815) had married a Ganga princess Pusundari. By this matrimonial relationship, Jainism got its lost influence and rejunuvated in various places where it was already enjoying influence deep rootedly. The relentless efforts of Saint Accananthi also gained this achievement.

The inscriptions below these sculptures reveal the department officials, nobles and individuals who patronized these sculptures. Revenue officials, Security officials, and individuals like, Enathi Nadi of Kalavalinadu, Seliyapandi from peruvembathur, Sathan Araiyan of Venpurainadu, Eviyamputhi from Venbaikudi were caused to be made these sculptures, Still one individual stone image ofa sitting Thirthankara, is installed on the main road of this village and worshipped as a local folk god Muniyandi by the local people. These jaina monuments are protected by the department of Archaeology Governement of Tamilnadu.

शिखर जी मधुबन में डोली मजदूर संघ को मिला अंतर्मना गुरुदेव का आशीर्वाद एवं प्रसाद

सिंहनिष्क्रीड़ितव्रत की अखंड मौनव्रत साधना मे लीन साधना महोदधि अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर महाराज ससंघ बीसपंथी कोठी मधुबन शिखर ज़ी में विराजमान हैं। 15 दिसम्बर शिखर जी मधुबन में डोली मजदूर संघ के सम्मलेन में लगभग 500 से भी अधिक भाई-बहनो को अंतर्मना संघ द्वारा वितरित हुआ मिष्ठान प्रसाद।

इस अवसर पर संघ की ओर से श्री आयुष जैन (बिट्टू), श्री प्रमोद जैन(मामा), श्री कोल साहब अजमेर, श्री सतेंद्र जैन छतरपुर ने उपस्थित रहकर मिष्ठान वितरण किया। इस अवसर पर अन्तर्मना उवाच में लिखा कि

ज़िन्दगी के रथ में, लगाम बहुत है,
अपनों के अपनों पर, इल्ज़ाम बहुत है..
ये शिकायतों का दौर चल रहा है मेरे दोस्त,
लगता है उम्र कम और इम्तिहान बहुत है..!

इसलिए माता, पिता, गुरू और प्रभु से शिकायत नहीं, अब शुक्र गुज़ार करो, धन्यवाद दो। और कहो - आपकी वरदानी छाव सदा हम पर बनी रहे। धन, दौलत, सुख-सुविधायें तो आती जाती रहेगी। ये सब तो भाग्य का विषय है। जो मिलना है, वह तो मिलना ही है। ना मांगों तब भी मिलेगा। कितना मिलना है-? यह तो जन्म से पूर्व ही - जन्म पुस्तिका में लिख दिया जाता है। जो मिलने वाला है उसे

क्यों मांगना। अगर तुम्हारा पैसा बैंक के खाते में जमा है, तो तुम्हारा दुश्मन भी काउन्टर पर बैठा हो, तो उसे भी पैसा देना पड़ेगा। और यदि खाते में कुछ भी जमा नहीं है तो तुम्हारा अपना ही लडका काउन्टर पर बैठा हो तो भी वह नहीं दे पायेगा। इसलिए माता, पिता, गुरू और प्रभु से चरण, आचरण, सेवा, सौभाग्य और साहस मांगों जिससे यह जीवन सुख, शान्ति, आनंद का पर्याय बन जाये,...!

'हेरिटेज ऑफ इण्डिया'

सम्मेदशिखरजी: वर्तमान परिद्रश्य

सम्मेदशिखर को मौज मस्ती का पर्यटन अड्डा बनाने पर जैन समाज में आक्रोष

-"पद्मश्री" कैलाश मड़बैया, भोपाल
वरिष्ठ साहित्यकार

'एक बार बन्दे जो कोई, ताहि नरक पशुगति नही होई' उपरोक्त कथन दुनिया में केवल 20 तीर्थंकरों के निर्वाण वाले, एक मात्र आदिकालीन श्रमण तीर्थ सम्मेदशिखरजी के बारे में मिलता है जो वर्तमान में झारखण्ड स्थित पर्वत पर, 20 टोंको/शिखरों पर विद्यमान मंदिरों/मठों के रुप में सुरम्य प्रकृति प्रांगण में श्रंखलाबद्ध सन्निहित है। विश्व में और किसी तीर्थ के बारे में कहीं, कभी नहीं ऐसा प्रमाणिक कथन उक्त जैसा सुना या पढ़ा गया। वर्तमान में उक्त सूर्य-गरिमा पर भी राजनीतिक राहु-केतु की लालची कुद्रष्टि शायद इसलिये लग गई कि जैन अहिंसक और अल्प संख्यक हैं।

सच यह है कि भारतीय तीर्थो में झारखण्ड स्थित सम्मेदशिखरजी ही देश का एक मात्र पहाड़ पर स्थित सम्मेदशिखर नामक यह तीर्थ है जिसे यूनेस्को ने 'हेरिटेज'/'वैश्विक धरोहर तीर्थ' की सूची में मान्यता, पूरे पर्वत को दे दी है। वह भी संभवतः इसलिये कि सम्मेदशिखर पर बने 20 जिन तीर्थंकरों के जिनालय पावन, पुरातात्विक, प्राकृतिक सुरम्यता के साथ करोड़ों जैन धर्मावलम्बियों द्वारा आदि काल से पूजे जा रहे हैं। चूंकि वे केवल मंदिर वाली टोंकॅ/शिखर मात्र नही, अपितु तीर्थंकरों के अतीत में सम्पन्न आध्यात्मिक कल्याणकों के कारण नैसर्गिक रुप से उकेरे 'चरणचिन्हजी' के कारण सिद्ध, ऐतिहासिक, प्रणम्य व वन्दनीय हैं। इसके कारण ही सामान्य मंदिरों से हटकर तीर्थ की परिभाषा में भी विशिष्ट पूज्य हैं। मूलनायक और सबसे बाद में उक्त तीर्थ से तेइसवें जिन तीर्थकर पार्श्वनाथ का निर्वाण हुआ था इससे संक्षिप्त में इसे पारसनाथ तीर्थ या पारसनाथ पर्वत नाम से अभिलेखित है। तीर्थदर्शन के लिये समतल से लगभग 9 मील की पर्वत की चढ़ाई और 9 मील की उतराई करना पड़ती है। और जब पुराणों के साथ सरकारी अभिलेखों में पारसनाथ पर्वत सर्व मान्यताओं के कारण अंकित हो चुका तो पारसनाथ के अनुयायियों का हक ही तो स्थाईरुप से उस पर्वत पर बनता ही है। रेलवे स्टेशन का नाम भी पारसनाथ ही है। क्या सदियों से दूसरे लोग आदिवासी संथाल झारखण्ड में नहीं थे ? तब क्यों नहीं औरों के हक का सवाल पूर्व में उठा ? तो अब क्यों भला-आ बैल मुझे मार ? उक्त पर्वत पर एक भी जैनेतर मंदिर नहीं रहे बल्कि कहें कि पूरे सम्मेदशिखर पर जैनों के आराध्यों के ही जिनालय हैं इससे पूरा पर्वत ही जैन तीर्थ के रुप में शिखरजी माने पर्वत जी या पर्वतराज के रुप में मान्य व आदिकाल से वन्दनीय तीर्थ है। अब चूँकि सर्वमान्य तीर्थ है लाखों यात्री दर्शनार्थ वर्षभर आते हैं इससें धन भी बरसता है तो प्रलोभी कतिपय जैनेतरों की नजर में चढना ही था सो अब ल़ालच सामने आ गया है। साथ ही जैन अहिंसक व तीर्थों पर शान्ति चाहते हैं इससे अहिंसकों द्वारा मनमानी छेड़छाड भी शुरू हो गई है।

जहाँ तक हमे पता है, शुरुवात झारखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मरांडी के बयान से हुई कि सम्मेदशिखर पर आदिवासियों /संथालों का हक है। हाल ही में एक खबर और आई है कि भाजपा विधायक दल के नेता श्री बाबूलाल मरांडी ने एक गलत काम और किया है कि शिखर जी पर क्षेत्रपाल के सामने एक अजैन भवन का अनिधकृत गर्भगृह का

शिलान्यास 21 दिसम्बर को कर जैनों को आक्रोशित कर दिया है। उसे संथालों का पर्यटन अड्डा बनाया जा रहा है। मतलब पावन आध्यात्मिक तीर्थ को मौज मस्ती का अड्डा बनाने पर उतारु हैं राजनीतिज्ञ? अब अहिंसक तीर्थ पर हिंसा का नाच होगा, मांस भक्षण व शराब सब चलेगा पर्यटन स्थल पर। अब बताइये हुआ न 'आ बैल मुझे मार'? जैन समाज में आग सुलग उठी है। तीर्थ कमेटियों को तत्काल उसे किसी भी तरह से रोकना ही पड़ेगा। सम्पूर्ण देश इस कुकृत्य की निन्दा करता है। भाजपा को तत्काल ऐसे लोगों के विरुद्ध कार्यवाही करना चाहिये जिससे जैन और भाजपा के सम्बन्ध खराब न हों। अन्यथा आने वाले चुनावों में जैन समाज, भाजपा का विरोध भी कर सकती है। यों भी इसके पहले गुजरात के गिरनार पर्वत पर कतिपय भाजपाइयों ने जैनों के विरुद्ध काम किया है। अब उक्त नेता जी को राजनीति चमकाने के लिये कोई मुद्दा तो बहस का चाहिये, तो अहिंसक जैन ही सबसे कमजोर लगे बस छेड़ दिया उन्हें। शायद सौदेबाजी कर कुछ ऐंठने की नियत हो? अब नेता जी को कौन समझाये कि आदिवासियों आदि के हक में जैनियों को तुम क्या जानो ?

जैनों ने कभी किसी का हक नहीं छीना, वह तो दाता समाज है। पर विघ्नसंतोषी यह भी न भूल जायें कि वे अहिंसक हैं, नपुंसक नहीं। अहिंसा के लिये हिंसा करना पाप नहीं है जिसका उल्लेख हर धर्म में है। फिर यहाँ किसी को धर्म पर क्या आपत्ति ? पहाड़ पर वनोपजों का हक जिन्हें लेना हो ले लें पर्वत के उत्पादों को, पत्थर तो उखाड़ेगे नहीं? और पर्वत पर जैनेतरों का कोई मंदिर मूर्ति तो है नहीं, इससे जैन तीर्थ पर हक तो न जतायें, न बेबुनियाद छेड़ छाड़ कोई करे। जैनों के मन में आदिवासियों के प्रति अनादर तो कभी नहीं रहा है न रहेगा। वह मात्र भारत के जैन ही हैं जो राजस्थान स्थित प्रख्यात महावीर जैन तीर्थ पर भगवान महावीर के रथ को चलानें में गूजरों/एक प्रकार के आदिवासियों, तक को पहला हक आज भी देते हैं। चॉदनपुर के महावीर-प्रतिमा की कथा कौन नहीं जानता ? कदाचित कतिपय राजनीतिज्ञ न जानते हों तो किसी महावीर जयन्ती पर देख आयें जैनियों के महावीर जी तीर्थ में। पिछड़े गरीब गूजर समाज के आदिम लोग, जैनियों से पहले और अधिक जयकारा महावीर जी में लगाकर भक्ति करते हैं। सम्मेदशिखरजी में वैसे ही पवित्र हो कर, तीर्थों की भक्ति झारखण्ड के आदिवासी करें, किसी को क्या

आपत्ति हो सकती है पर अपवित्र अवस्था में अशुद्ध जल किसी मूर्ति पर नहीं चढ़ायें। न हिंसा करें, न अपवित्र वातावरण बनायें। जैन तीर्थ यात्री तो शिखरजी पर 18 मील पैदल वंदना करते हैं, पर कभी पर्वत पर खाना पीना भी नहीं खाते और वहाँ गंदगी का नामोनिशान तक नहीं छोड़ते। ऐसे करे कोई, फिर झगड़ा रह ही नहीं जायेगा ? जैन धर्मावलम्बी तो जात-पात में विश्वास ही नहीं करते। उनके तो आराध्य तीर्थंकर ही विभिन्न जातियों से रहे है यथा तीर्थंकर नेमिनाथ, कृष्ण के चचेरे भाई थे अर्थात यादव जाति के, तो तीर्थंकर महावीर क्षत्रिय समाज से थे। आदि आदि। दुर्भाग्य यह है कि इक्कीसवीं विकसित सदी में भी कतिपय लालची लोग जिसकी लाठी उसकी भैंस चरितार्थ करना चाहते हैं। वर्तमान में देश के अल्पसंख्यकों के साथ कुछ ज्यादा ही नफरत का चलन चल पडा है। सत्ता दिलाने के लिये वोट चूंकि बहुसंख्यकों के पर्याप्त हो जाते हैं - जीतने के लिये, इसलिये बहुसंख्य के तीर्थ/मंदिर ही क्या चमकेंगे ? अल्पसंख्कों के वोट चूंकि निर्णायक भूमिका को प्रभावित नहीं करते क्या इसीलिये क्या अल्पसंख्यकों, जिनमें जैन भी शामिल है के तीर्थो/मंदिरों पर कब्जा किया जायेगा ? तोड़ा जायेगा? संरक्षित नहीं किया जायेगा ? वर्तमान की क्या यही नीति व नियति है? उदाहरण के लिये एक और प्रकरण देखें - गुजरात के गिरनार पर्वत की पॉचवीं टोंक पर, बलात हिंसक अघोरियों ने कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध तीर्थंकर नेमिनाथ-निर्वाण स्थल पर आदिकालीन नैसर्गिक उकरे श्री चरणों पर, जबरन अवैधानिक निर्माण कर जैनियों को दर्शन करना तक दुर्लभ कर दिया व अहिंसक भक्तों के दिल को दुखाया है और अब सम्मेदशिखर पर गिद्धों की आँख लग गई है जो किंचित भी सहनीय नहीं है। क्या यही वसुधैव कुटुम्बकम है? क्या ऐसे ही भारत धर्म निरपेक्ष देश रह पायेगा ? विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र ऐसे ही कहलायेगा ? क्या जैन समाज को आजादी के अमृत महोत्सव में यही तोहफा है ? ऐसे क्या विश्व गुरुत्व और लोकतंत्र बच पायेगा ? क्या जैन समाज का देश निर्माण में, आजादी में कोई योगदान नहीं ? क्या महावीर और गांधी की अहिंसा को भारत में यही स्थान रह गया है।

भगवान सब को सद्बुद्धि दे। भारत-भारती का पथ प्रशस्त हो.....

★★★★

20 दिसम्बर - समाधि दिवस विशेष

आचार्य श्री 108 विजय सागर जी महाराज

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विजय सागर जी महाराज का जन्म सन 1881 में माघ सुदी अष्टमी को ग्राम सिरोली, जिला ग्वालियर (म.प्र.) में हुआ था। आपने इटावा (उ.प्र.) में क्षुल्लक दीक्षा तथा मथुरा (उ.प्र.) में ऐलक दीक्षा ग्रहण कर मोक्षमार्ग की ओर अपने कदम बढ़ाए। परम पूज्य आचार्य श्री 108 सूर्य सागर जी महाराज के कर-कमलों द्वारा आप सन 1943 में राजस्थान के नागौर जिला स्थित मारौठ नगर में मुनि दीक्षा अंगीकार कर आत्म-कल्याण के मार्ग पर आरुढ़ हुए। मुनि रूप में आपने दिगम्बर मुनि की चर्या, उनके मूलगुणों की साधना तथा उनके तपश्चर्या के विविध आयामों से जैन समाज को परिचित करवाया।

छाणी परंपरा के पंचम पट्टाधीश परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज के प्रमुख शिष्य परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज ने पूज्य आचार्य-प्रवर के समाधि दिवस के अवसर पर उनके चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए बताया कि आचार्य श्री 108 विजय सागर जी महाराज कठोर तपस्वी तथा वचनसिद्ध साधु थे। एक बार एक गांव के श्रावकों ने आपको खारे पानी की कुएं के बारे में शिकायत की, तो आपने सहजता से कह दिया कुएं में तो मीठा पानी ही है। तभी उन लोगों ने कुएं का पानी चखा तो पाया कि पानी खारा नहीं, मीठा ही था। जीवन में अनेक प्रसंगों पर उपसर्गों को सहन करते हुए आप निरंतर कठोरतम चर्या का पालन करते रहे।

जैन मुनि परंपरा के संरक्षण व संवर्धन में आपका योगदान अत्यंत विशिष्ट है। आपके भीतर विद्यमान अथाह ज्ञान भण्डार तथा अद्वितीय प्रभावना को देखते हुए लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.) में चतुर्विध संघ की उपस्तिथि में आचार्य पद से सुशोभित कर आपको आचार्य श्री 108 शान्तिसागर जी महाराज (छाणी) की परंपरा में द्वितीय पट्टाधीश के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।

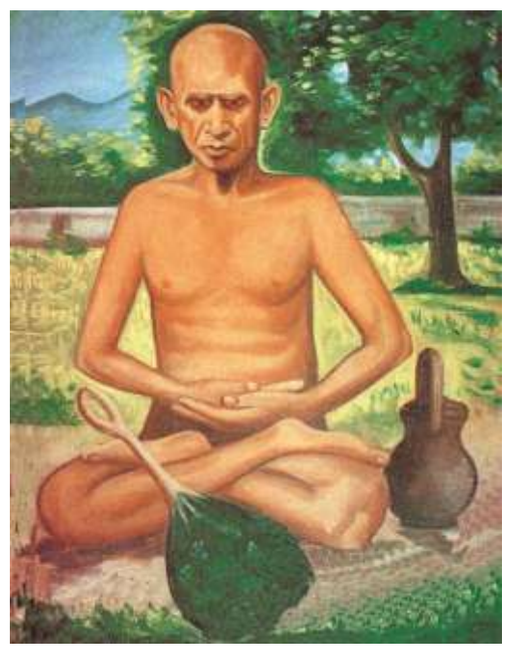

आपके कर-कमलों द्वारा अनेकों भव्य जीवों ने जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार कर आत्मकल्याण के मार्ग पर अपने कदम बढ़ाये। आपने अपनी पारखी नज़रों से पूज्य आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज (भिण्ड) की योग्यता को परखकर उन्हें छाणी परंपरा के तृतीय पट्टाचार्य के रूप में आसीन किया।

सन 1962 में पौष बदी नवमी तदनुसार दिनांक 20 दिसम्बर 1962 को मुरार, जिला ग्वालियर (म.प्र.) में समाधिपूर्वक मरण कर इस नश्वर देह का त्याग किया। पूज्य आचार्य श्री का जितना विशाल एवं अगाध व्यक्तित्व था, उनका कृतित्व उससे भी अधिक विशाल था। इस गौरवशाली महान परम्परा में वर्तमान में सहस्त्राधिक दिगम्बर साधु समस्त भारतवर्ष में धर्मप्रभावना कर रहे हैं तथा भगवान महावीर के संदेशों को जनमानस तक पहुंचा रहे हैं। ★★★★

Nainagiri Panchkalyanak

Vidhan Singhai, Bhopal

This past week, I had the privilege of attending probably the most sacred of events of Jains - *Panchkalyanak*. This account explains what a *Panchkalyanak* is from a novice's point of view.

In essence, a *Panchkalyanak* is conducted to make an idol from a mere stone piece to a venerated God. Once a sculptor has prepared the idol from a raw stone after months of cutting, chipping, and polishing, it may look like the idol of a god, but as per the Jain scriptures, it is still a carved stone piece. To make it a worshipable idol, it must be consecrated. This process of consecration is *Panchkalyanak*.

A *Panchkalyanak* begins with hoisting of Jain Flag consisting of Five Colours of five Parmesthies. It is conducted over 5 days where each day tells a story about the key life stages of *Teerthankar Aadinath Bhagwan*. A point of interest here is that the idol that you want to consecrate may be of any *Teerthankar*, or, like in case of Nainagiri, *Siddh Bhagwan* (difference between *Teerthankar* and *Siddh* is another topic), the story-telling events of 5 days are always of *Aadinath Bhagwaan* only.

Another important point is that the presence of a *Muni Maharaj* is required to conduct all the events. The entire event is conducted by a *Pratishthacharya*.

During the 5 days, *Pooja-Vidhan* is done during the morning hours from 6 am to 12 pm, post which, various cultural and fun events are planned till late night. Of course, music and dancing is a fundamental attraction to all humans, and therefore, the *Pooja*, evening *Aarti*, and the cultural programmes have a continuous performance of musicians. *Acharya, Munivar, Pratishthacharya* and other learned personalities talk on Jain principles & teachings. And it's all done in harmony with the theme of the day.

Participants of a *Panchkalyanak*

There are various participants of the *Panchkalyanak* and most people can participate though there are restrictions for few roles. The expectation is always to participate as a couple - husband and wife. The two main pairs of roles are *Maata-Pita* and *Saudharm indra-indrani*. During the planning days of the *Panchkalyanak*, the roles are advertised and sponsorships are solicited. Typically, these two pairs solicit the highest sponsorships.

A point worth noting is that raising funds through such sponsorships is a very important aspect of *Panchkalyanak*. These funds are then used for the development and maintenance of the temples, premises, and the area around. In fact, even during the event, sponsorships are solicited for various activities like *Abhishek Kalash*, first *Aarti, Shantidhaara, Paad Prakshalan* etc.

The participants are expected to perform their

duties assigned to them for their respective roles in very bright and colourful costumes. And they also need to carry out their roles during the cultural programmes. But soon enough, they are not acting, but really start living their roles and get really emotional as the stories play out during the 5 days.

Some of the other roles worth mentioning are *Ishanindra, Mahendra, Kuber, Saamanya Indra, Maha Yagyanayak, Yagyanayak, Maha Mandaleshwar, Mandaleshwar, Bharat, Bahubali, Ashtakumaariyaan, and Chhappan Kumariyaan.*

Themes for the 5 days

There are 5 main events in the life of a *Teerthankar* - *Garbha* (conception), *Janm* (birth), *Deeksha* (consecration as a *Muni*), *Keval Gyan* (gaining omniscience) and *Moksha* or *Nirvana* (salvation) - and each day of the *Panchkalyanak* celebrates one of these events. The morning *Pooja*, activities of the day, and the cultural programmes, are all based on the day's theme.

The 5 days of the *Panchakalyanak* are very enjoyable and go by very quickly. People from various nearby towns and villages come over, enjoy the events which they can join in, contribute in whatever form and shape that they can, eat a great quality feast throughout the day and have a gala family time. With so many people doing *Pooja* every day, there's a need for a lot of *Dravya*, and so, some people contribute by bringing in *Dravya* from their villages. It's quite a sight to watch a large family with people of all ages bringing in large plates full of *Dravya Samagri*. The evening *Aarti* is very entertaining with many people dancing to the tunes of bhajans. And if you believe, you're getting a lot of blessings while having so much fun and entertainment. What can be better!

A note on *Siddh Bimb Panchkalyanak* of Nainagiri

The *Siddha Bimb Panchakalyanak* of Nainagiri was conducted for the consecration of 5 idols of *Acharya Varadatta* and his four disciples *Indradatta, Gunadatta, Saayardatta*, and *Munindradatta*, that are now seated in the largest siddha mandir in the country so far. It was a proud moment for our family to see the 5 beautiful idols, the largest stone siddha yantra and the dazzling artistry of the temple.

The *Panchkalyanak* was conducted under the guidance of *Bramhachari* Jai Nishant as the *Pratishthacharya* with the blessings of *Aacharya Udaarsagar Ji Maharaj* and *Munivar Shri Upshantsagar Ji*. Dr. Mahendra Kumar Jain Manuij, Indore, Pt. Rishabh Kumar Jain, Rajim Navapara, Pt Ashok Kumar Jain Bamhori and Pt Manish Jain, Tikamgarh assisted the *Pratishthacharya* through various events of the 5 days. Jain families from all the neighbouring villages and towns came in to get the blessings of Lord *Parshwanath*. Daily delicious delicacies were arranged for them in a large *Bhojnalaya* overlooking a divine panorama of a beautiful lotus-filled lake, lush green forest and heavenly temples on the hill. Our family will always be grateful to Lord *Parshwanath* of Nainagiri for enabling us to be able to contribute to this event.

तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल की विशेष सभा में

श्री अनिल पवनकुमार जमगे का अध्यक्षपद पर चुनाव

औरंगाबाद में तीर्थक्षेत्र कमेटी के महाराष्ट्र अंचल के महामंत्री श्री भरत ठोले द्वारा ज़ूम एप पर ऑनलाईन विशेष सभा का आयोजन किया गया जिसमें तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंदजी पहाडिया, महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, उपाध्यक्ष श्री नीलम अजमेरा भी विशेष आमंत्रित थे । महाराष्ट्र अंचल के निवर्तमान अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवालजी ने गत ढ़ाई वर्ष में किये गये विशेष उपक्रमों का ब्योरा देकर विविध क्षेत्रों के किये अवलोकन की जानकारी सभी सदस्यों को दी। जीर्णोद्धार के कार्य हेतु केन्द्रीय समिति को भेजे गये निवेदन का स्पष्टीकरण दिया। अपने वक्तव्य के अंत में निजी कारणों से उन्होंने अपने अध्यक्ष पद का त्याग पत्र सभा के समक्ष रखा । प्रसंग के अनुसार श्री पापड़ीवालजी के भावनाओं का सम्मान करते हुए समस्त सभा ने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र को स्वीकार कर उनके कार्य हेतु उन्हें बधाई दी। वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं खंडेलवाल दिगंबर जैन पंचायत के अध्यक्ष श्री ललितजी बबनलालजी पाटणीजी ने समाजसेवी, णमोकार तीर्थ के मंत्री श्री अनिल पवनकुमार जमगे अध्यक्षपद के लिये नाम का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव पर इचलकरंजी के श्री रविंद्रजी देवमोरे, श्री ओमजी पाटणी एवं सभा में उपस्थित अनेक सदस्यों ने अनुमोदन देकर प्रस्ताव को पारित किया। श्री अनिल जमगे ने इस निवेदन को स्वीकार करने पर राष्ट्रीय अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं महामंत्रीजी ने भी उनका विशेष अभिनंदन किया।

इसी प्रसंग पर परमपूज्य प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्यश्री देवनंदीजी महाराजजीने श्री संजय पापड़ीवाल के कार्य हेतु उनका विशेष अभिनंदन किया। गत 25 वर्षो में श्री अनिलजी जमगे एवं परिवार तथा उनके सहयोगी कार्यकर्ताओं ने समाज एवं तीर्थक्षेत्र के विकास हेतु जो विशेष कार्य किया है वह अत्यंत सराहनीय है। गुरूसेवा के प्रति समर्पित उनके पुण्य का ही प्रताप है जो उन्हें महाराष्ट्र अंचल का अध्यक्ष पद प्राप्त हुआ है। उनके द्वारा तीर्थों का संरक्षण एवं संवर्धन हो ऐसा विशेष आशीर्वाद श्री अनिलजी को आचार्यश्री ने प्रदान किया । इस सभा में उपस्थित बा. ब्र. वैशाली दीदी-णमोकार तीर्थ, पं. डॉ. महावीर शास्त्री-सोलापुर, श्रीपाल गंगवाल-गेवराई, श्री फुलचंद जैन-औरंगाबाद, श्री सुमेर काला-मुंबई, श्री. प्रा. डी. ए. पाटील सर-सांगली, श्री ललित पाटणी-औरंगाबाद, श्री मिहिर गांधी-अकलूज, श्री संदेश गांधी-भीमानगर, श्री महावीर शहा-श्रीपुर, श्री बाबूभाई गांधी-अकलूज, श्री वालचंद पाटील-कुमठा, श्री शाम पाटील-सोलापुर, श्री दीपक शहा-सोलापुर, श्री विजयजी लोहाडे-नाशिक, श्री वीरकुमार दोशी-सदाशिव नगर, श्री नवजीवन दोशी-वेळापुर, श्री जिनेंद्र दोशी-बोंडले, श्री निनाद चंकेश्वरा-अकलूज, श्री महावीर गंगवाल-औरंगाबाद, श्री पारस लोहाडे-नाशिक, श्री प्रकाश पापडीवाल- औरंगाबाद, श्री विनोद लोहाडे-औरंगाबाद, श्री केतन ठोले-औरंगाबाद, श्री राजकुमार कासलीवाल-औरंगाबाद आदी मान्यवरों ने भी अनिल जमगे के इस चुनाव पर इन्होंने विशेष अभिनंदन किया।

सेवाभावी व्यक्तित्त्व के धनी श्री अनिल पवनकुमार जमगे

श्री अनिल जी के पिताजी पवनकुमार हिराचंद जमगे एक आदर्श मुनिभक्त एवं सत्शील श्रावक थे। बचपन से पिताजी के धर्म एवं निस्सिम सुसंस्कार अनिल के व्यक्तित्वपर प्रतिबिंबित हुए। आचार्य विमलसागरजी, आचार्य भरतसागरजी, आचार्य कुंथुसागरजी, आचार्य देवनन्दिजी एवं अनेक त्यागियों के परम् भक्त बने अनिलजी ने तीर्थरक्षा हेतु भी महत्त्वपुर्ण कार्य किया।

इसी आदर्श श्रावक की भूमिका निभाते हुए अनिल पवनकुमार जमगे एक जैन युवा कार्यकर्ता के रूपमें जैन समाजमें परिचित हुए और जैन समाजको एक कर्मठ कार्यकर्ता का लाभ हुआ।

धर्म एवं समाज सेवा के लिए उत्सुक, उत्साह और साहस के प्रतिरूप अनिलकुमार के धार्मिक और सामाजिक आदर्श के रूपमें श्रीमान आर. के. जैन, श्रीमती सरिता महेन्द्रकुमार जैन, श्रीमान नीलम अजमेरा, श्रीमान संतोषजी पेंढारी, श्रीमान शिखरचंद पहाडीया, श्री प्रभाचंद्रजी शास्त्री, डॉ. रणजीत गांधी, श्री हर्षवर्धनजी शहा, श्री शरदचंद्रजी गांधी, श्री

हर्षवर्धनजी बुबणे, श्री कांतीलालजी नळे, श्री सुकुमार चंकेश्वरा, श्री दीपक आहेरकर, श्री दीपक शहा जैसे ज्येष्ठ अनुभवी व्यक्तित्व के ओर से प्रेरणा और उनकी शुभेच्छा मिलीं। पिछले अनेक वर्षों में श्री अनिलकुमार जमगे ने अपने कार्यों से जैन समाज में स्वयं की एक पहचान बनाई। उन्होने जैन समाज, तीर्थ, साधुसेवा का जो प्रामाणिक प्रयास किया है वह सराहनीय है।

धर्म और समाज कार्य-

- दिगंबर जैन समाज की शिखर संस्था भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी के माध्यम से गत पाँच वर्षों से जीर्णोध्दार कमिटी के राष्ट्रीय चैयरमेन की क्रियाशील भूमिका निभाते हुए महाराष्ट्र के तीर्थ नागनाथ औंढा, तेर, जळगाव जामोद, सावरगाव, कुमठा, कासार - आष्टा, पांचालेश्वर, जटवाडा, नाईचाकूर, मांगीतुंगी, नांदगिरी, शिरपुर, दहिगाव, भातुकली, मुक्तागिरी आदि अनेक क्षेत्रों पर विकास योजना के लिये कमेटी की ओर से योगदान दिलाने वाले श्री अनिलकुमार जी सर्वोपरि पदाधिकारी है।
- देश के विभिन्न प्रदेशों में श्री क्षेत्र कुंथुगिरी, णमोकार तीर्थ, श्रवणबेलगोल जैसे क्षेत्रों पर जैन समाज की ओर से आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव एवं अन्य राष्ट्रीय आयोजनों में महत्वपूर्ण कमेटी के पदाधिकारी के रूप में सक्रिय सहभाग दिया।
- सोलापुर एवं परिक्षेत्र में विहार करने वाले जैन साधुओं का विहार, आहार, वैय्यावृत्त आदि व्यवस्था के लिए का योगदान एवं प्रत्यक्ष सेवा दी।
- महाराष्ट्र के जैन समाज में आयोजित विधि-विधान, महावीर जयंती, पर्युषण-पर्व, धर्म सम्मेलन, प्रकाशन आदि में सक्रिय सहयोग एवं आयोजन में प्रमुख सहभाग।
- जैन समाज के सामाजिक समस्या के समाधान के लिए प्रयत्नरत जैसे - जैन धर्म की स्वतंत्रता, प्राचीनता, अल्पसंख्यांक समस्या, मुनि विहार में निर्मित कठिनाईया, जैन तीर्थ संरक्षण एवं मंदिर में होने वाले अतिक्रमण आदि समस्या निदान के लिये सक्रिय भूमिका।
- जैन वधु - वर परिचय सम्मेलन, रक्तदान शिविर, त्यागी आरोग्य सेवा, वैद्यकीय सहयोग, स्कूली बच्चों लिए अर्थसहाय्य आदि कार्यों के द्वारा अनिल जी ने अपनी विशेष छाप समाज पर छोडी है।

विशेष पद

अनिल जी के उत्कृष्ट कार्य को देखकर उन्हे अध्यक्ष, मंत्री, संचालक आदि विविध पद सौंपे गये।

2) मंत्री- दिगंबर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखरजी ट्रस्ट
3) राजुलमती श्राविकाश्रम , सोलापुर
4) सकल दिगंबर जैन समाज , सोलापुर
5) दिगंबर जैन पंचम समाज , सोलापुर
6) चारित्र्य चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर महाराज वक्तृत्व स्पर्धा फंड
7) श्री क्षेत्र णमोकार तीर्थ
8) श्री क्षेत्र कुंथुगिरी पदाधिकारी
9) प्रज्ञाश्रमण दिगंबर जैन संस्थान
10) श्री अतिशय क्षेत्र , कुमठा
11) विद्यानंद को - ऑप बँक , सोलापुर
12) जिल्हा बाल सुधारगृह , सोलापुर
13) चारित्र्य चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर मुनि दीक्षा महोत्सव राष्ट्रीय कमिटी

अनिलजी के उत्कृष्ट कार्य हेतु उन्हें देश की अनेक शीर्ष संस्थाओं द्वारा पुरस्कार देकर सन्मानित किया गया.

- सेवा कार्य के लिये दक्षिण भारत जैन सभा, सांगली द्वारा युवारत्न
- समाजरत्न युवा द्वारा णमोकार तीर्थ, चांदवड
- धर्मभूषण द्वारा श्राविका संस्था समूह ,
- समाजभूषण द्वारा स्वस्तिश्री लक्ष्मीसेन भट्टारक विद्यापीठ, कोल्हापुर
- श्रावकरत्न - द्वारा दिगंबर जैन पंचम समाज विकास मंडळ, सोलापुर

ऐसे सेवाभावी अनिलजी द्वारा तीर्थक्षेत्र कमिटी महाराष्ट्र आंचल के अध्यक्ष रूप में उत्कृष्ट कार्य हो यही मंगल भावना.

-प्रो. डॉ. महावीर प्रभाचंद्र शास्त्री
प्राकृत विभाग प्रमुख- वालचंद महाविद्यालय, सोलापुर.

शीतलतीर्थ रतलाम में पंचकल्याणक फरवरी 2023 में

रतलाम के श्री दिगंबर जैन धर्म स्थल **शीतल तीर्थ** (धामनोद) पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 2023 में आयोजित किया जा रहा है। इस वृहद आयोजन को लेकर तीर्थ पर 9 जनवरी को बैठक आयोजित की गई तथा सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा है। प्रारंभ में तीर्थ से जुड़े आचार्य श्री योगींद्र सागर जी म.सा. के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन किया। तीर्थ की अधिष्ठात्रि सविता दीदी ने बताया कि अगले वर्ष पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किए जाने की योजना बनाई जा रही है इस दौरान 108 पिच्छियो का सानिध्य भी मिलेगा। शीतल तीर्थ पर महिलाएं भी अभिषेक कर सकती है तथा यहां पर दिगंबर व श्वेतांबर जैन संतों के ठहरने की पूरी व्यवस्थाएं संचालित की जा रही है। उन्होंने योगींद्र सागर जी मसा के बारे में बताते हुए कहा कि उन्होंने कहा था कि मैं नहीं रहूंगा तो भी शीतल तीर्थ पर मेरी शक्तियां कार्य करेगी, उनकी इच्छा थी कि कैलाश पर्वत का निर्माण हो तथा 72 जिनालय बनाए जाए। शीतल तीर्थ का जैसा नाम है वैसी शीतलता यहां पर मिलती है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ट्रस्ट अध्यक्ष महेंद्र जैन (गुड वाला) कोटा ने कहा कि गुरुवर की शक्तियां यहां तीर्थ पर जागृत अवस्था में हैं जो आज भी लोगों का भला कर रही है। डॉ.अनुपम जैन ने कहा कि अनेकान्तवाद का सिद्धांत जैन धर्म के पास है। श्री हसमुख भाई ने कहा कि भव्यता के साथ सादगी भी पञ्च कल्याणक की विशेषता होगी समर्पण की भावना से हम काम करेंगे तो सफल होंगे। जमनालाल हपावत, मुंबई ने कहा कि जन्म कल्याणक महोत्सव से पुण्य अर्जित होगा तथा दिगंबर जैन धर्म की परंपरा जीवित रहेगी। दीपेश गडिया ने कहा कि पंचकल्याणक के लिए पूरे समाज जन एकजुट हैं। सुरेश संघवी ने कहा कि गुरुदेव ने प्राप्त सिद्धियों से अनेकों लोगों का उद्धार किया था। मदन हुमड ने कहा कि गुरुवर की हस्तलिखित सभी कृतियां प्रकाशित करना चाहिए। कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित एसपी गौरव तिवारी ने कहा कि जैन धर्म प्रकृति के सबसे अधिक नजदीक है हमें कर्मकांड तथा पाखंड कम करना चाहिए। शीतल तीर्थ श्रद्धा का केंद्र बन चुका है गुरुदेव हमें प्रेरणा देते हैं। कार्यक्रम को अभय जैन, सुनील जैन एडवोकेट, सुरेश संघवी, देवेंद्र जैन ने भी संबोधित किया कार्यक्रम में मुम्बई, कोटा, बड़वानी, उज्जैन, भीकनगांव ,बड़ोदरा,नांदगाव,सनावद, इंदौर, भिंड, खंडवा, उज्जैन, सहित विभिन्न स्थानों से गुरु भक्त आए थे। कार्यक्रम के दौरान अशोक झाँझरी भीकनगांव, नूतन कासलीवाल नासिक, आनंद काला नांदगांव, योगेंद्र लुहाडिया इंदौर, पद्म काला बड़वानी, राजेंद्र जैन भिंड, डॉ. नेमीचंद जैन उज्जैन, राकेश चपलमन कोटा, अभय जैन इंदौर व एसपी गौरव तिवारी, गगन बड़जात्या उदयपुर, श्री अशोक झांझरी भीकनगांव, जमनालाल हपावत का प्रतिक चिह्न व माला से सम्मान किया। ओम अग्रवाल, मांगीलाल जैन, चंद्रसेन गडीया, महावीर गोधा, प्रभात जैन, सीमा गांधी, पंकज बिलाला एडवोकेट, ईश्वर जैन, देवेंद्र जैन आदि मौजूद थे।यह जानकारी राकेश पोरवाल ने दी। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमति नंदिनी जैन तथा संचालन डॉ. अनुपम जैन ने किया।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से सम्मेदशिखर में जरूरतमंदों को नि:शुल्क कम्बल वितरण

मधुबन पंचायत के पारसनाथ पर्वत के पूर्वीक्षेत्र में बसा धोलकाढ्डा ग्राम में सोमवार को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से गरीब व जरूरतमंद लोगों को कंपकपाती ठण्ड से बचाव के लिए नि:शुल्क कम्बल वितरण किया। गाँव के वार्ड सदस्य प्रतिनिधि श्री राजेश किस्कु के द्वारा गरीबों व जरूरतमंद लोगों की सूची सौंप कर कम्बल वितरण कार्य किया गया। वितरण समारोह में तीर्थक्षेत्र कमेटी शाखा कार्यालय मधुबन से मुख्य रूप से वरिष्ठ प्रबंधक श्री सुमन कुमार सिन्हा, पी.आर. श्री पवनदेव शर्मा, श्री अशोक कुमार, श्री अजय कुमार वनरक्षी आदि उपस्थित रहे।

निर्वाण कल्याणक के साथ चाँदखेड़ी में हुई प्रतिष्ठा

पूर्व मुख्यमंत्री वंसुधरा राजे सिंधिया पहुँची चाँदखेड़ी

विश्व में भारतीय संस्कृति की पहचान अलग है – मुनिश्री सुधासागरजी महाराज

कौन सी एक वात पुकारी जाये जिससे कि सारा विश्व एक नाम से पुकारा जाये। वर्षो की खोज कर सारे विश्व ने कहा कि सभी को एक तराजू पर नहीं तोला जा सकता जब सारी संस्कृति को एक सारे विश्व की पाश्चात्य संस्कृति में रखा गया भारतीय संस्कृति के जन्म के पहले भी हम थे और जन्म के बाद रहेंगे हमारे यहाँ भोजन के पहले भगवान को भोग लगता है, भगवान को अर्घ समर्पित किया जाता है। जब शिकागो में विवेकानंद जी ने विश्व संसद में कहा कि 'माताओं एवं बहनो' तो सभी उन्हें भोदू कहने लगे तब उन्होंने कहा कि हमारी धरती को भी माता कहते हैं विवेकानदं जी ने जब सारे विश्व को सन्देश दिया तो दुनिया के विद्वानो के मस्तक झुक गये। उक्त आशय के उद्गार मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने श्री मद्जिनेन्द्र पंच कल्याण महा महोत्सव समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किए इस दौरान प्रतिष्ठा चार्य प्रदीप भइया के मंत्रोचार के साथ विश्व शांति महा यज्ञ में सबा करोड़ मंत्रों के साथ आहुतिया समर्पित की गई।

आप से ही हम सब है - वसुंधरा राजे

पंचकल्याणक महा महोत्सव के समापन समारोह को संबोधित करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने कहा कि आप से हम सब है गुरुदेव आपकी कृपा दृष्टि हम सब पर सदा बनी रहे। आपने चाँदखेड़ी तीर्थ की कायाकल्प करा दी जो कार्य सरकार में रहकर नहीं हो सके उन्हें पुरा हुआ देखकर मन बहुत प्रफुल्लित हो रहा है उन्होंने कहा कि गुरुदेव आपके सामने कुछ बोलना सूरज को दीप दिखाने के समान है। आपके आने से इस पूरे अंचल की कायाकल्प हुई है आपके आशीर्वाद के रहते हमें किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। कुये में भी कूद जाऊं तो भी आप बचा लेगें इसके पहले पूर्व मुख्यमंत्री श्री वसुंधरा राजे व सांसद दुष्यतसिंह जी ने मुनि संघ के चरणों में श्री फल भेंट किए।

इस अवसर पर वसुंधरा राजे ने कहा कि आदिनाथ स्वामी और मुनिश्री के आशीर्वाद से हमें काफी शक्ति मिलती है तथा इनके आशीर्वाद से आने वाला समय भी अच्छा ही निकलेगा। श्रीमती राजे ने क्षेत्र के विकास की बात करते हुए कहा कि क्षेत्र का विकास भगवान और संतों के आशीर्वाद से हुआ है, हम तो निमित्त मात्र हैं। मुनि श्री का आशीर्वाद हमेशा से हमारे ऊपर रहा है। जीवन में अच्छा बुरा समय आता जाता रहता है, लेकिन आशीर्वाद से सब ठीक हो जाएगा।

पूर्व मुख्यमंत्री का कमेटी ने किया वहुमान

इस दौरान चाँदखेड़ी कमेटी के अध्यक्ष श्री हुकम काका, महामंत्री श्री नरेश वेद, कोषाध्यक्ष श्री गोपाल जी एडवोकेट श्री आनंद जैन, मध्यप्रदेश महासभा के संयोजक श्री विजय जैन धुर्रा, सौधर्म इन्द्र श्री राजेन्द्र हरसौरा, श्री विनोद सुरलाया, श्रीमती सुशीलाजी पाटनी, श्रीमती शांता जी पाटनी (आर के. मार्बल), श्रीमती आशा रानी पाण्ड्या, श्री महेन्द्र जी पाण्ड्या एवं श्री संजय जैन ने स्वागत कर स्मृति चिन्ह भेंट किया।

इस दौरान मुनिश्री सुधासागरजी ने कहा कि आज महातीर्थ सौंप रहे है, उन्होंने कहा कि साधु जब कोई बात बोलता है तो विश्व कल्याण के लिए ही होती हैं। चाँदखेड़ी की एक छोटी सी पुलिया को फोर लाइन की तरह बनने के लिए कहा था उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को इंगित करते हुए कहा कि आज आपके पूरे झालावाड़ क्षेत्र में फोर लाइन व मेगा हाई वे भरे पड़ें है। अपने क्षेत्र को आपने क्या सौपा था आज आप देख ले ये कैसा चमन हो गया है जो हम आपको सौंप रहे हैं अब सारे तीर्थ बार बार चन्द्रोदय एक बार ऐसा अपूर्व क्षेत्र बन गया चाँदखेड़ी।

आज से महातीर्थ बन गया - उन्होंने कहा कि आज भगवान के निर्वाण कल्याण के साथ ही पाषाण से निर्मित जिनबिम्ब भगवान बन गये इसी के साथ आज से चन्द्रोदय तीर्थ चाँदखेड़ी महातीर्थ बन गया। हमारी संस्कृति ऐसी है जहाँ राष्ट्र, समाज और धर्म एक साथ मिलकर कार्य करते हैं। दुनिया में ये सबसे अलग पहचान बनाने वाली संस्कृति है।

आंध्रप्रदेश में दिगंबर जैन मुनिश्री धर्म प्रभावना के लिए पधारे

- सुरेश जैन, पेद्दहोतूर

आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभाविक शिष्य मुनिश्री १०८ पायसागर जी महाराज का सन 2021 का चातुर्मास बीदरे, जिला-तुमकूर, कर्नाटक में संपन्न हुआ। चातुर्मास पूर्ण करने के बाद उत्तरभारत विहार यात्रा के क्रम में मुनिश्री ने बीदरे, तोविनकेरे, मधुगिरि, पावगडा, कल्याणदुर्ग मार्ग का चयन किया जो आंध्रप्रदेश तक जाता है। मुनि संघ इस मार्ग से आंध्रप्रदेश पधारे एवं आचार्यश्री कुंदकुंद देव की जन्मभूमि कोणकोंडला में स्थित प्राचीन दिगंबर जैन गुफा मंदिर के दर्शन किए तीन दिन मुनिश्री यहीं रुके। कोणकोंडला गांव में जैन समाज बिल्कुल नहीं है।

5/12/2021 दिवस रविवार को कोणकोंडला पहाड़ पर स्थित दिगंबर जैन मंदिर परिसर में कर्नाटक और आंध्रप्रदेश की जैन समाज के समक्ष तिरुक्कुरल (कन्नड़ अनुवाद), प्रतिष्ठा पराग, नुडिमुत्तु शतक इन तीन कन्नड़ जैन ग्रंथों का

लोकार्पण हुआ तत्पश्चात मुनि श्री का विहार हुआ। मुनि संघ विहार करके चिप्पगिरि होकर प्राचीन दिगंबर जैन मंदिर दर्शन हेतु 7/12/2021 को पेद्दाहोतूर गांव पधारे यहां श्री सुपार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में दर्शन किया और उस दिन महाराज जी की आहारचर्या भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के स्थानिक कार्यकर्ता श्री सुरेश जैन के घर में सम्पन्न हुई, वहां से विहार कर महाराजश्री चिन्नाहोतूर गांव में पहुंचे और अतिशयकारी तीर्थंकर पार्श्वनाथ स्वामी के दर्शन किए वहां से अडोनी होकर पुनः मुनिसंघ का कर्नाटक प्रवेश हुआ।

इस दौरान मार्ग में गौशाला का भ्रमण भी किया। महराज श्री का संघ रायचूर पहुंच गया आगे तेलंगाना की ओर विहार चल रहा है जिसमें महबूबनगर, हैदराबाद होकर महाराज जी नागपुर के रास्ते कुंडलपुर पहुंचने की सम्भावना है। मुनिश्री पायसागर जी वर्तमान दिगंबर जैन मुनि परंपरा में पहले ऐसे मुनिराज है जिन्होंने आंध्रप्रदेश राज्य के करनूल, अनंतपुर जिले में विहार किया। मुनि के सानिध्य से इस क्षेत्र में जिनधर्म की बहुत प्रभावना हुई, पुनः मुनिसंघ का सानिध्य इस क्षेत्र को मिले इस भावना से नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु!

विनम्र निवेदन

शिखरजी की वंदना करने वाले तीर्थ यात्रियों को दुर्घटना की स्थिति में
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से मिलेगी विशेष सुविधाएँ

तुरंत संपर्क करें :-

पहाड़ इन्चार्ज - श्री राधेश पाठक - 6203176256,
वरिष्ठ प्रबंधक - श्री सुमन कुमार सिन्हा - 7903037270,
पी.आर.ओ. - श्री पवन देव शर्मा - 8709991717
पहाड़ सुपरवाइजर - श्री विष्णु - 7654800707
प्रबंधक - श्री देवेन्द्र कुमार जैन - 9430702400

श्री सम्मेदशिखरजी की वंदना करने वाले सभी तीर्थयात्रियों को सूचित किया जाता है कि शिखरजी की वंदना करते समय यदि किसी यात्री को हृदयघात होता है या अन्य दुर्घटना घटती है तो उन्हें तुरंत उपरोक्त नम्बरों पर सम्पर्क करना होगा जिससे उनके पास प्राथमिक चिकित्सा व्यवस्था के साथ एम्बुलेंस उनके तक पहुँच सके और पीड़ित का तुरंत उपचार कर उसे नीचे मधुबन तलहटी में लाकर जहाँ वह ठहरें है उस संस्था के प्रबंधक के सहयोग से अस्पताल तक छोड़ने की व्यवस्था तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा की जायेगी।

दुर्भाग्यवश यदि किसी यात्री का स्वर्गवास हो जाता है तो उनके पार्थिव शरीर को तलहटी में लाकर नजदीकी अस्पताल में कोठी प्रबंधक के सहमती से सौंप देने की सुविधा प्रदान की जाएगी।

निवेदक
संतोष जैन पेंढारी
राष्ट्रीय महामंत्री
शिखरचंद पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पर्क सूत्र : मधुबन कार्यालय नं० - 9431387704, 9430702400 डाकबंगला नं० - 6203176256, 9431973270

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
शाखा कार्यालय मधुबन, शिखरजी, जिला-गिरिडीह
Email: tirthvandana4@gmail.com
हमारी आधिकारिक वेबसाइट : http://tirthkshetracommittee.com
Email: shikharjioffice@gmail.com

सम्मेदशिखरजी मधुबन में मांसाहार के विरुद्ध भव्य रैली प्रदर्शन

सम्मेदशिखर जी की पवित्रता बनाए रखने के लिए जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने सरकार को लिखा पत्र

सम्मेदशिखर मधुबन की पवित्रता के साथ छेड़-छाड़ होने की घटनाएँ लगातार घटती जा रही हैं। अभी हाल ही में श्री सम्मेदशिखरजी अहिंसा के स्थल पर पश्चिम बंगाल से आये पर्यटकों द्वारा बेजुवान जीवों (मुर्गा-मछलियों) को बड़ी ही निर्दयता के साथ मार-काट कर मांस खाने-बनाने एवं बिक्री करने की घटना घटी है जिससे सम्पूर्ण जैन समाज में आक्रोश उत्पन्न है और सभी ने इस कार्य की निंदा की है।

घटना के समाचार मिलते ही इस सन्दर्भ में तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा तुरंत पुलिस आरक्षी अधीक्षक (SP) को टेलीफोन पर संपर्क किया गया और उन्होंने तुरंत संज्ञान लेते हुए अपनी फ़ोर्स मधुबन भिजवाई तथा थाना प्रभारी को उचित कार्यवाही हेतु दिशा निर्देश दिए। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के **राष्ट्रीय अध्यक्ष** *श्री शिखरचंद पहाड़िया* एवं **राष्ट्रीय महामंत्री** *श्री संतोष जैन (पेंढारी)* ने इस निंदनीय कार्य का विरोध करते हुए एवं सम्मेदशिखर जी की पवित्रता बनाएं रखने के लिए उपायुक्त जिला समाहरणालय, आरक्षी अधीक्षक, गिरिडीह, अनुमंडल पदाधिकारी एवं थाना प्रभारी को पत्र भेजकर ठोस कार्यवाही करने की मांग की है।

दूसरे दिन मंगलवार दिनांक 4 जनवरी 2022 को विश्व प्रसिद्ध तीर्थस्थल सम्मेदशिखरजी मधुबन में मांसाहार एवं मदिरापान के विरोध में सभी संस्थाओं द्वारा मुख्यरूप से रैली का आयोजन किया गया। श्रीसम्मेदशिखर दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र मांस-मदिरा के लिए सरकार की ओर से वर्जित क्षेत्र घोषित किया गया है उसके बाद भी मांस आदि की खुलेआम बिक्री की जा रही है और पुलिस प्रशासन उदासीन है। जिससे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी, मधुबन, श्री दिगम्बर जैन तेरहपंथी कोठी, मधुबन, आचार्य श्री शांतिसागर ट्रस्ट, जैन श्वेताम्बर सोसायटी, श्री समस्त श्वेताम्बर मूर्ती पूजक संघ ट्रस्ट, उत्तरप्रदेश प्रकाश भवन, सिद्धायतन, बाजार सेवा समिति, श्री शिखरजी स्वच्छता समिति आदि संस्थाओं ने एकत्रित होकर एक रैली का आयोजन कर मासांहार, मद्यपान के खुले आम बिक्री का विरोध करते हुए मधुबन थाना प्रभारी दिलशान विरुवा को ज्ञापन सौंप कर निवेदन किया कि भविष्य में इस प्रकार की घटना न घटे उसके लिए पुलिस विभाग सदैव चौकन्नी रहे।

तदुपरांत **प्रशासन की ओर से ठोस कार्यवाही करते हुए उपायुक्त-सह-जिला-दण्डाधिकारी ने अनुमंडल पदाधिकारी को उचित कार्यवाही के आदेश दिए।**

सिद्दीपेट में प्राप्त हुई मध्यकालीन जैन मूर्ति

जैन चौमुखों के दो सेट सिद्दीपेट जिले के कोहेड़ा मंडल के कुरेला गांव में एक कृषि क्षेत्र में पाए गए हैं। कुरेला गांव के एक युवा पेरुगु महेंद्र रेड्डी और श्रीरामोजू हरगोपाल के नेतृत्व में कोट्टा तेलंगाना चरित्र ब्रिंडम के एक सक्रिय सदस्य अहोबिलम करुणाकर द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर, प्लीच इंडिया फाउंडेशन के पुरातत्वविद् और सीईओ, डॉ. ई शिवनागिरेड्डी मौके पर पहुंचे और जांच की। जैन मूर्तियों के ऐतिहासिक महत्व का आकलन करने के लिए गांव और उसके आसपास का गहन निरीक्षण। गांव में जैन चौमुखों के कुल तीन सेट हैं, जिनमें से एक पोचम्मा मंदिर के पास स्थित है और जैन चौमुखों के अन्य दो सेट पहली बार तोलाबंदा के पास मैदान से दो किमी की दूरी पर पाए गए थे। स्क्वायर की पहचान की, जिसमें प्रत्येक तरफ 1.5 फीट की गहराई के साथ दो इंच की गहराई थी जिसमें जैन चौमुख डाले गए थे।

कला और प्रतिमा की शैली के आधार पर, रेड्डी ने उन्हें वेमुलावाड़ा (10 वीं शताब्दी ईस्वी) के राष्ट्रकूट या चालुक्यों की तारीख दी, जिन्होंने उस क्षेत्र पर शासन किया जहां से ये जैन मूर्तियां पाई जाती हैं। रेड्डी ने ग्रामीणों को मूर्तियों की ऐतिहासिकता के बारे में जागरूक किया और उनसे अपील की कि उन्हें फिर से तोलबंदा में उनके मूल स्थान पर रखकर उन्हें भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जाए। अहोबिलम करुणाकर, मो. नसीरुद्दीन. कोट्टा तेलंगाना चरित्र ब्रिंडम के मोहम्मद अनवर पाशा और ग्रामीणों - बिकसापति, रमेश और किशोर ने अन्वेषण में भाग लिया।

बगदाहा स्कूल में सिंहपुर,लैहेरबेड, कंसितांड कुबरी के जरूरत मंद ग्रामीणों को 116 कम्बल वितरण किया गया

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी के निर्देश पर यह कम्बल वितरण किया जा रहा है। कार्यक्रम में श्री कैलाश प्रसाद अग्रवाल सामाजिक कार्यकर्ता के पहल पर आज का कम्बल वितरण किया गया। मौके पर कमेटी के वरिष्ठ प्रबंधक श्री सुमन कुमार सिन्हा, श्री पवनदेव कुमार शर्मा, पी आर ओ, वन विभाग के श्री अशोक कुमार व मन्नू तुरी उपस्थित थे। आगे भी वितरण की योजना है।

तीर्थस्थल श्री महावीर जी में "वर्धमान गौशाला" को दिया जा रहा विशाल रूप

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीर जी की पावन वसुधा पर आपके सहयोग से **"वर्धमान गौशाला"** को एक विशाल रूप दिया जा रहा है। "वर्धमान गौशाला" में जब आपके द्वारा आजीवन सदस्यता ग्रहण कर गौ सेवा का पुण्य लाभ लिया जाएगा तो निश्चित ही आपको महावीर स्वामी के टीले से प्रगट होने का दृश्य स्मृति में आएगा ।

लम्बे समय से श्री महावीर जी क्षेत्र द्वारा गौशाला संचालित है, परन्तु आपको गौ सेवा का पुण्य लाभ प्राप्त नहीं हो सका। गत दिनों पूर्व गौशाला में एक दातार के मन में एक बछड़ी वाली गाय भेंट करने भाव जागृत हुए और वह साकार हो सका धनतेरस 02 नवम्बर 2021 को। सुनहरी रंग की हष्ट-पुष्ट गाय का नामकरण "कामधेनु" व बछड़ी का नामकरण "धनवंतरी (धन्नो)" किया गया तथा गौशाला का नाम "वर्धमान गौशाला" रखना तय हुआ। उसी समय मन में भाव आया कि क्यों न आप सभी के सहयोग से श्री महावीरजी क्षेत्र द्वारा संचालित गौशाला को विशाल रूप दिया जाये।

आप निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं –

आजीवन सदस्यता हेतु न्यौछावर राशि रु.- 51,000/-, दसवर्षीय सदस्यता राशि रु. - 21,000/- पंचवर्षीय सदस्यता राशि रु.- 11,000/-

दानदातार परिवार का नाम गौशाला के बाहर बोर्ड पर अंकित किया जायेगा।

निवेदक

सुधांशु कासलीवाल, अध्यक्ष – श्री महावीरजी क्षेत्र

आयोजक - भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

अखिल भारतीय निबंध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित निबंध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रतिभागी तीर्थक्षेत्रों के प्रति अपने विचार रख सकते हैं और उपहार भी जीत सकते हैं। यह प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित की जा रही है। आज ही भाग लें-

अंतिम तिथि – २८ फरवरी २०२२ **शब्द सीमा – २५०० शब्द**

वर्ग १ - उच्च शिक्षित वर्ग

विषय – मानसिक शांति के अनूठे केंद्र - जैन तीर्थ

पात्रता – स्नातक व समकक्ष स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण कोई दिगम्बर जैन पुरुष या महिला

वर्ग २ - पत्रकार वर्ग

विषय - पत्रकारों का जैन तीर्थों के प्रति दायित्व

पात्रता - किसी मान्यता प्राप्त पत्रकार संगठन का सदस्य अथवा किसी रजिस्टर्ड पत्रिका में वर्ष २०१९ एवं २०२० या दोनों मिला करके न्यूनतम ३ लेख प्रकाशित कराने वाले दिगम्बर जैन पुरुष या महिला

प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार	सांत्वना पुरस्कार
२१,०००/- रू.	११,०००/- रू.	५,०००/-रू.	२,०००/- रू. (दोनों वर्गों से तीन-तीन प्रतिभागी)

सभी विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किया जायेगा

प्रतियोगिता के नियम -

- लेख A/४ आकर के कागज़ पर सुवाच्य हस्तलिपि या कम्प्यूटर कम्पोज किये होने चाहिए।
- लेख २ प्रतियों में भेजे जाने चाहिए।
- लेख के साथ **उच्च शिक्षित वर्ग** हेतु स्नातक या उससे अधिक की योग्यता का प्रमाण भेजें।
- लेख के प्रथम पृष्ठ पर प्रतिभागी का नाम, उम्र, पता, मोबाइल नंबर व ईमेल आईडी आदि का पूरा विवरण देवें।
- **पत्रकार वर्ग** हेतु किसी पत्रकार संगठन की सदस्यता का प्रमाण अथवा २०१९ या २०२० में प्रकाशित किसी पंजीकृत पत्रिका में प्रकाशित कोई तीन लेखों की छाया प्रतियों की प्रमाणित प्रति संलग्न करें।
- दोनों वर्गों में स्त्री एवं पुरुष दोनों भाग ले सकते हैं।
- समस्त प्राप्त लेख भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की संपत्ति होंगे।
- प्रतियोगिता में निर्धारित अंतिम दिनांक के बाद भेजे जाने वाले निबंध/लेख मान्य नहीं होगें।
- लेख निम्न पते पर डाक / कोरियर से भिजवाएं। दूरभाष पर पुष्टि संभव नहीं है।

डॉ. अनुपम जैन, प्रधान संपादक – जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुम्बई-४००००४. ईमेल: tirthvandana4@gmail.com

विशेष: प्रतिभागियों के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को अपना निबंध भेजने के लिए दिनांक - २८ फरवरी २०२२ शाम ४ बजे तक का समय निर्धारित है।

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/ 2022-24
Jain Tirth vandana, English-Hindi January 2022
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/ 2022-24
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRA BAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : UMANATH RAMAJOR DUBEY